दैनिक

कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

ईरान ने कई बार संघर्ष-विराम तोड़ा ... पेज 5

मथुरा-वृंदावन से द्वारका तक, कान्हा ... पेज 7

वर्ष 6, अंक 310 | भोपाल, बुधवार 22 अप्रैल, 2026 | वैशाख शुक्ल पक्ष, पंचमी पश्चात षष्ठी, 2083 | मूल्य 2 रुपए

समुद्र में भारत का नया 'सुरक्षा कवच': अब विदेशी कंपनियों पर नहीं रहेगी निर्भरता

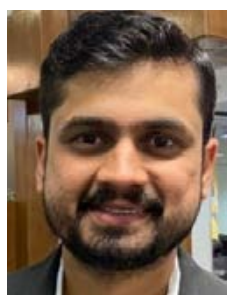

विशेष रिपोर्ट
अभिषेक द्विवेदी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भारत सरकार ने समुद्री व्यापार के क्षेत्र में एक ऐसा क्रांतिकारी कदम उठाया है, जो आने वाले समय में न केवल हमारी अर्थव्यवस्था की दिशा बदलेगा, बल्कि देश को 'आत्मनिर्भर' बनाने की दिशा में एक बड़ी छलांग साबित होगा। केंद्रीय कैबिनेट ने 'भारत मैरीटाइम इंश्योरेंस पूल' (BMIP) के गठन को मंजूरी दे दी है।

लेकिन एक आम नागरिक के लिए इसका क्या मतलब है? आइए इसे आसान भाषा में समझते हैं।

क्या है समुद्री बीमा (Maritime Insurance)?

जैसे हम अपनी कार या घर का बीमा करवाते हैं ताकि किसी दुर्घटना की स्थिति में नुकसान की भरपाई हो सके, वैसे ही समुद्र में चलने वाले बड़े जहाजों का भी बीमा होता है। इसे 'मैरीटाइम इंश्योरेंस' कहते हैं। समुद्र का सफर जोखिमों से भरा होता है—चाहे वो भयंकर तूफान हो, तकनीकी खराबी हो, समुद्री लुटेरों का डर हो या युद्ध जैसी स्थिति। बिना बीमा के, कोई भी जहाज समुद्र में उतरने का जोखिम नहीं लेता।

यह कदम इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

अब तक भारत के पास अपना कोई बड़ा समुद्री बीमा सिस्टम नहीं था। हमारे 90% से ज्यादा जहाज विदेशी बीमा कंपनियों (खासकर यूरोप और लंदन स्थित) पर निर्भर थे। इसके दो बड़े नुकसान थे:

पैसा बाहर जाना: हर साल भारत से अरबों रुपये प्रीमियम के रूप में विदेशी कंपनियों की जेब में जाते थे।

विदेशी नियंत्रण: अगर दुनिया के किसी हिस्से में तनाव बढ़ता है, तो विदेशी कंपनियां मनमाने ढंग से प्रीमियम बढ़ा देती हैं या बीमा देने से मना कर देती हैं। इससे हमारी तेल और जरूरी सामानों की सप्लाई रुकने का खतरा रहता था।

इस योजना में क्या खास है?

भारत सरकार ने 12,980 करोड़ की संप्रभु गारंटी (Sovereign Guarantee) के साथ इस बीमा पूल की शुरुआत की है। यह पूरी तरह से 'मेड इन इंडिया' सुरक्षा चक्र है।

क्या-क्या कवर होगा? यह जहाजों के ढांचे (Hull), मशीनों, और युद्ध जैसे हालातों (War Risks) में होने वाले नुकसान की पूरी भरपाई करेगा।

रणनीतिक स्वायत्तता: अब हमें संकट के समय विदेशी कंपनियों के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं होगी। हमारे जहाज भारतीय सुरक्षा के घेरे में रहेंगे।

आम जनता पर इसका क्या असर होगा?

आप सोच रहे होंगे कि जहाजों के बीमा से एक आम आदमी का क्या लेना-देना? दरअसल, इसका सीधा असर आपकी जेब पर पड़ेगा:

सस्ता होगा सामान: इस कदम से जहाजों के बीमा की लागत में करीब 25% की कमी आने की उम्मीद है। जब सामान लाने-ले जाने का खर्च कम होगा, तो पेट्रोल, डीजल और विदेशों से आने वाली चीजों की कीमतें भी कम हो सकती हैं।

निर्बाध सप्लाई: युद्ध या वैश्विक तनाव के समय भी भारत के पास अपने जहाज भेजने की ताकत होगी। इससे देश में जरूरी चीजों की कमी कभी नहीं होगी।

रोजगार के अवसर: भारत का अपना बीमा सेक्टर मजबूत होने से वित्त और समुद्री क्षेत्र में हजारों नए रोजगार पैदा होंगे।

एक नए युग की शुरुआत

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का मानना है कि समुद्री मार्ग अंतरराष्ट्रीय व्यापार की जीवन रेखा हैं। 'भारत मैरीटाइम इंश्योरेंस पूल' सिर्फ एक बीमा पॉलिसी नहीं है, बल्कि यह भारत के समुद्र पर अपना हक जताने और वैश्विक व्यापार में एक 'लीडर' बनने की कहानी है।

अब भारत के जहाज, भारत की सुरक्षा और भारत का गर्व—एक साथ समुद्र की लहरों पर राज करेंगे।

पीएम मोदी ने केदारनाथ के कपाट खुलने पर दी बधाई, तीर्थयात्रियों को दिलाए 'पांच संकल्प'

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने चारधाम यात्रा शुरु होने पर देशवासियों को शुभकामना संदेश देते हुए, उत्तराखंड आने वाले तीर्थयात्रियों से पांच संकल्पों का पालन करने का आग्रह किया है। उत्तराखंड में चारधाम यात्रा के भव्य शुभारंभ और बाबा केदारनाथ के कपाट खुलने के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं। अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने इस यात्रा को भारत की 'सनातन सांस्कृतिक चेतना का भव्य उत्सव' करार दिया। उन्होंने कहा कि यह यात्रा जगद्गुरु आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और माध्वाचार्य जैसी महान विभूतियों की विरासत को आगे बढ़ाने वाली है।

केदारनाथ धाम के कपाट खुलने पर प्रेषित अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि - देवभूमि उत्तराखंड की पावन धरती पर चारधाम यात्रा का शुभारंभ हो गया है। उन्होंने कहा कि बाबा केदार के दर्शन सहित चारों धामों की यह पावन यात्रा भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना का एक भव्य उत्सव है। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने बद्रीनाथ और केदारनाथ की यात्राओं से भारतीय संस्कृति को एक नई दिशा दी थी। जगद्गुरु रामानुजाचार्य और जगद्गुरु माध्वाचार्य ने भी अपने धर्मविचारों को समृद्ध करने के लिए बद्रीनाथ की यात्रा की थी।

आज भी हिमालय की गोद में विराजमान ये चारों धाम हमारी शाश्वत आस्था और विश्वास के दिव्य केंद्र हैं। हर वर्ष विविध भाषाओं, परंपराओं और संस्कृतियों के लोग यहां पहुंचते हुए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के भाव को और अधिक सशक्त करते हैं। इस वर्ष की यात्रा भी इसी परंपरा का विस्तार है।

प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में कहा है कि विकसित भारत के संकल्प में विकसित उत्तराखंड की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि कुछ वर्ष पहले, उन्होंने बाबा केदार के द्वार पर खुद ये कहा था कि ये दशक उत्तराखंड का दशक होगा। आज उत्तराखंड की प्रगति इस विश्वास को साकार कर रही है। उत्तराखंड आज पर्यटन, आध्यात्मिकता और आर्थिक प्रगति, तीनों क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

पिछले कुछ वर्षों से उत्तराखंड में विकास का जो महायज्ञ चल रहा है, उसने चारधाम यात्रा को पहले से अधिक सुगम, सुरक्षित और दिव्य बनाया है। जिससे श्रद्धालुओं, संतजनों और पर्यटकों को सुविधा हो रही है। प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड आने वाले अतिथियों से अपील करते हुए कहा कि वे अपनी यात्रा के दौरान डिजिटल उपवास रखते हुए, उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता को जीने का प्रयास भी करें। इससे उन्हें एक अलग संतुष्टि भी मिलेगी।

पांच संकल्प

पहला संकल्प - स्वच्छता सर्वोपरि

धाम और उसके आसपास स्वच्छता बनाए रखें। नदियों को साफ रखने के लिए अपना योगदान दें। सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त यात्रा का संकल्प लें और इस पावन धरा की गरिमा को बनाए रखें।

दूसरा संकल्प - प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता

हिमालय की इस दिव्य धरा के प्रति संवेदनशील रहे। प्रकृति के संतुलन को बनाए रखते हुए, एक पेड़ मां के नाम' जैसे प्रयासों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें।

तीसरा संकल्प - सेवा, सहयोग और एकता पर बल

पुरातन काल से तीर्थ यात्राएं सर्वजन की सेवा और सामाजिक समरसता को स्थापित करने का माध्यम रही हैं। आज भी लोग इसी सेवा भाव से तीर्थयात्रियों की सेवा करते हैं। इसीलिए तीर्थयात्री अपनी यात्रा के प्रत्येक दिन, किसी ना किसी रूप में, लोगों की सेवा का एक काम अवश्य करें।

सहयात्रियों की सहायता करें और देश की विभिन्न जगहों से आए लोगों से जुड़े। उनकी परंपराओं का सहभागी बनकर "एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को इस यात्रा के माध्यम से सशक्त करें।

चौथा संकल्प - वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा

अपने मूल स्थान से चलकर घर लौटने तक अपने कुल खर्च का पांच प्रतिशत हिस्सा लोकल उत्पादों को खरीदने पर जरूर खर्च करें। अगर किसी स्थानीय चीज की जरूरत इस मौसम में नहीं भी है, तो भी उसे भविष्य के इस्तेमाल के भाव से ही खरीदने का प्रयास करें।

पांचवां संकल्प - अनुशासन, सुरक्षा और मर्यादा का पालन

यात्रा के नियमों और यातायात निर्देशों का पालन करें। एक जिम्मेदार और सजग नागरिक के रूप में इस तीर्थ यात्रा को सुरक्षित और सुगम बनाएं। हम ये प्रयास करें कि हमारी यात्रा से, इस यात्रा के आयोजन और प्रबंधन में जितने भी लोग लगे हुए हैं, उन्हें कोई असुविधा ना हो।

प्रधानमंत्री ने क्रिएटर्स, इंफ्लूएंसर्स से भी उत्तराखंड की स्थानीय कहानियों और यहां की छोटी-छोटी परंपराओं को भी जन-जन तक पहुंचाने की अपील की है। देवभूमि उत्तराखंड की पवित्र धरती पर आज श्री केदारनाथ धाम के कपाट पूरे विधि-विधान के साथ हम सभी श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए हैं।

भारत भूलता नहीं! पहलगाम के बदले का वो गुप्त अध्याय, हवा में ही नाकाम हुआ पाकिस्तान का सबसे बड़ा हमला

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

भारत आज 22 अप्रैल के पहलगाम आतंकी हमले की पहली बरसी और उसके बाद की गई जवाबी कार्रवाई 'ऑपरेशन सिन्दूर' को याद कर रहा है। इसी बीच, पिछले साल के संघर्ष से जुड़ी एक ऐसी रोमांचक और रोंगटे खड़े कर देने वाली जानकारी सामने आई है, जिसने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय वायु सेना (IAF) की सतर्कता ने देश की राजधानी दिल्ली को एक बड़े विनाश से कैसे बचाया था।

पिछले साल मई में भारत-पाकिस्तान संघर्ष के चरम पर, एक पाकिस्तानी बैलिस्टिक मिसाइल, जिसे फ़तेह या शाहीन श्रृंखला का माना जाता था, को उसके संदिग्ध लक्ष्य दिल्ली तक पहुँचने से पहले हरियाणा के ऊपर हवा में रोक दिया गया था। पश्चिमी सीमा के पास रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण अग्रिम हवाई अड्डे, सिरसा में तैनात भारतीय वायुसेना इकाई द्वारा सफल निष्प्रभावीकरण किया गया था। ऑपरेशन का नेतृत्व 45 विंग के एयर ऑफिसर कमांडिंग एयर कमोडोर रोहित कपिल कर रहे थे, जिनके कमांड निर्णय और त्वरित प्रतिक्रिया बड़े पैमाने पर क्षति को रोकने में निर्णायक साबित हुई। अवरोधन को सतह से हवा में मार करने वाली बराक-8 मिसाइल प्रणाली का उपयोग करके अंजाम दिया गया, जो भारत की वायु रक्षा ग्रिड की परिचालन तत्परता और तकनीकी ताकत को प्रदर्शित करता है। कुछ दिनों बाद सिरसा से बरामद हुए मलबे ने खतरे के पैमाने की पुष्टि की, जिसके दृश्य उस समय व्यापक रूप से प्रसारित हो रहे थे। लगभग एक साल बाद, यह इस बात की याद दिलाता है कि भारत एक बड़े तनाव के कितने करीब आ गया था - और कैसे तैयारियों ने इसे टाल दिया। रक्षात्मक और आक्रामक योजना सहित सक्रिय शत्रुता के दौरान एयर कमोडोर कपिल के नेतृत्व ने उन्हें 2025 में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा प्रदान किया गया युद्ध सेवा पदक दिलाया।

कमोडोर कपिल और उनकी टीम की आने वाली पाकिस्तानी मिसाइलों के खिलाफ सफल निगरानी ने पिछले साल कई लोगों की जान बचाई होगी; हालाँकि, यह सर्वविदित नहीं है। कमोडोर कपिल एक Su-30MKI पायलट हैं और उन्होंने एक ऑपरेशनल Su-30MKI स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया है। तब से यह प्रकरण भारत की विकसित होती वायु रक्षा वास्तुकला का एक निर्णायक उदाहरण बन गया है। सुदर्शन कार्यक्रम के तहत एक राष्ट्रव्यापी, बहुस्तरीय ढाल का विस्तार करने, एस-400, बराक-8 और स्वदेशी इंटरसेप्टर जैसी प्रणालियों को एकीकृत करने के प्रयासों के साथ, सिरसा अवरोधन आधुनिक युद्ध में सतर्कता, समन्वय और तेजी से निष्पादन के महत्व की याद दिलाता है।

म.प्र रोज सोसायटी के 13 सदस्यों का एक दल 23 अप्रेल को चीन के नानयांग में होनेवाले 17 वे हेरिटेज रोज कन्वेंशन में भाग लेने रवाना होगा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

म.प्र रोज सोसायटी के 13 सदस्यों का एक दल 23 अप्रेल को चीन के नानयांग में होनेवाले 17 वे हेरिटेज रोज कन्वेंशन में भाग लेने के लिए जा रहा है। यह कन्वेंशन चीन के नानयांग तथा शंघाई में पांच दिन तक चलेगा। इस कन्वेंशन में हर रोज दुनियाभर से आये हुवे गुलाब के विशेषज्ञ अपने अपने शोध प्रस्तुत करेंगे तथा अपने अपने क्षेत्र के हेरिटेज गुलाबों के बारेमे बताएँगे तथा शंकाओं का समाधान करेंगे। इसके साथ ही वहां पर जो गुलाबों के बगीचे हैं उनकी सैर करायेंगे। यह कार्यक्रम 3 दिन नानयांग तथा 2 दिन शंघाई में होगा। इस कार्यक्रम के दौरान सोसायटी की ओर से वहां आये हुवे सभी गुलाब प्रेमियों को भोपाल में जनवरी 2028 में होनेवाले वर्ल्ड रोज कन्वेंशन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जायेगा तथा इसके बारे में एक प्रेजेंटेशन भी दिया जाएगा। वहां जानेवाले दल का नेतृत्व वर्ल्ड रोज फेडरेशन के अध्यक्ष सुशील प्रकाश करेंगे। दल के बाकि सदस्य होंगे स.श्री गद्रे, नंदिता गद्रे, शैलेश अग्रवाल, आरती अग्रवाल, नसीम युसूफ , युसूफ खान, डेज़ी रानी जैन, विपिन जैन, हिमांशु अग्रवाल, तनु अग्रवाल , सुधाकर तथा मानवेन्द्र भक्ता।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबर: 9826035849, 9425006706

गर्मी में जैन समाज की महिलाओं ने गन्ने का रस वितरित किया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अखिल भारत वर्षीय दिगंबर जैन महिला परिषद, पद्मावती संभाग, कोहेफिजा शाखा द्वारा गर्मी के मौसम मे राहगीरों को गन्ने के रस का वितरण किया , जैन दर्शन में अक्षय तृतीया पर्व में इसका महत्व हे, इस अवसर पर मंजू जैन हिमांशु, ममता जैन, अनुप्रधान, एकता प्रधान, तृप्ति जैन एवं प्रमिला बांदरी मौजूद रही यह वितरण सुल्तानिया अस्पताल के पास स्थित रैन बसेरा आश्रय में जरूरतमंदों को भी किया गया। परिषद द्वारा इस प्रकार के सेवा कार्य समाज में करुणा एवं सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं।

एआई सम्मेलन...:डीपफेक और एआई से छेड़छाड़ कानून के लिए नई मुसीबत बन सकती है

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) जरूरी है, लेकिन सावधानी के साथ। ऐसा न हो कि फैसले चैटजीबीटी में डालकर निर्णय कर दें। वह इंसान नहीं है और भाव बदल सकता है। एआई की मदद लें, लेकिन निर्णय अपने विवेक से करें। यह बात मंगलवार को राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी में आयोजित एआई सम्मेलन में राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के निदेशक न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस ने कही। वहीं एनसीआरबी व बीपीआर एंड डी के महानिदेशक आलोक रंजन ने कहा कि एआई पर पूरी तरह से निर्भर होना खतरनाक होगा। इसका इस्तेमाल करें, लेकिन सिर्फ एक टूल की तरह।

उन्होंने कहा कि एआई कभी भी ह्यूमन इंटेलीजेंस से आगे नहीं हो सकता है, लेकिन एक बेहतर टूल बन सकता है। इस टूल का हमें ज्यूडिशियल प्रक्रिया, पुलिस इंवेस्टिगेशन, अभियोजन, फोरेंसिक और जेल सिस्टम में करना है। भोपाल में मंगलवार को एआई सम्मेलन में देश भर के 170 कानून विशेषज्ञों ने हिस्सा लेकर पूरे दिन चर्चा की। पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (बीपीआर एंड डी) ने केंद्रीय पुलिस प्रशिक्षण अकादमी और राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के साथ मिलकर क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) का इस्तेमाल विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया था।

इसमें न्यायपालिका और पुलिस के साथ जेल, फॉरेंसिक और अभियोजन विभाग के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया।

फोर्स मल्टीप्लायर नया हथियारः एआई को न्याय प्रणाली में "फोर्स मल्टीप्लायर' यानी ताकत को कई गुना बढ़ाने वाला बताया गया। लेकिन, इसके लिए कुछ नियम (एसओपी) बनाने पर सहमति बनी। इसमें कहा गया कि एआई के लिए इंसानी निगरानी को सबसे ऊपर रखना होगा। बैठक में रोडमैप पेश किया गया कि कैसे पुलिस की जांच से लेकर जेल प्रशासन तक में इस तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। खासकर सबूतों की पहचान में इसका इस्तेमाल करना। सम्मेलन में विशेषज्ञों ने एआई के खतरों से सावधान रहने पर जोर दिया। चर्चा हुई कि कैसे डीपफेक और इलेक्ट्रॉनिक सबूतों के साथ छेड़छाड़ कानून के लिए नई मुसीबत बन सकती है। चर्चा में आया कि मशीनी पक्षपात यानी एल्गोदिरम अपने हिसाब से निर्णय लेकर कहीं किसी निर्दोष को गलत तरीके से अपराधी न मान ले। इसलिए सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के निर्देशों का हवाला देकर बताया कि कैसे इनमें एआई का उपयोग करें।

जर्नलिस्ट्स यूनियन ऑफ़ मध्यप्रदेश (जम्प) द्वारा राज्य स्तरीय पत्रकार एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जर्नलिस्ट्स यूनियन ऑफ़ मध्यप्रदेश (जम्प) की बड़ौद इकाई के तत्वावधान में एक गरिमामयी राज्य स्तरीय पत्रकार एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। भगवान महावीर जैन विद्या मंदिर में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में पत्रकारिता की शुचिता और समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्वों पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ मुख्य अतिथि जम्प के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अरुण सक्सेना, राष्ट्रीय महासचिव नवीन आनंद जोशी, एडिशनल एसपी रविन्द्र कुमार बोयट, एसडीएम मिलिंद ढोके, और कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता गुड्डू लाला द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

पत्रकार समाज का सशक्त स्तंभः श्री सक्सेना : आयोजन को संबोधित करते हुए संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अरुण सक्सेना, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रविंद्र बोयट, अनुविभागी अधिकारी मिलिंद ढोके, कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता गुड्डू लाला आदि वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि पत्रकार समाज का दर्पण होता है। निष्पक्षता, निडरता और सत्यनिष्ठा ही पत्रकारिता की असली शक्ति है। बदलते दौर में जिम्मेदार और सकारात्मक पत्रकारिता की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। शासन-प्रशासन तक आमजन की आवाज पहुँचाने में पत्रकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रमुख पदाधिकारियों की रही उपस्थिती : इस कार्यक्रम में डॉ कमल आलोक प्रसाद, राष्ट्रीय प्रवक्ता बीएसपीएस, प्रांतीय महासचिव महेंद्र शर्मा, प्रांतीय संगठन सचिव राहुल सक्सेना, हर्ष नायक, प्रांतीय सचिव अमित रैकवार, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्याम निगम, विधिक सलाहकार मनोजलाल अहिरवार, भोपाल संभागीय अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह, भोपाल महिला संभागीय अध्यक्ष हिना मंसूरी, ग्वालियर संभागीय महासचिव रोहित सक्सेना, भोपाल संभागीय उपाध्यक्ष शुभम जैन के अतिरिक्त नेहा पांडेय, भोपाल जिला महासचिव रविन्द्र वैष्णव, ब्लॉक अध्यक्ष देवेश चित्रांशी, रघुवीर प्रजापति, रामनिवास शर्मा, राधेश्याम यादव, कविता वर्मा, लक्की श्रीवास्तव, तनुश्री राठौड़ उपस्थित रही।

प्रतिभाओं का हुआ सम्मान– समारोह में न केवल प्रदेश भर से आए पत्रकारों का सम्मान किया गया, बल्कि आगर मालवा जिले में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रशासनिक अधिकारियों और विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिभाओं को भी प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सराहा गया। सम्मानित होने वालों में मुख्य रूप से प्रशासनिक अधिकारी में कलेक्टर श्रीमती प्रीति यादव, एसपी विनोद कुमार सिंह, एएसपी रविंद्र बोयट, और एसडीएम मिलिंद ढोके, कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता गुड्डू लाला के साथ ही अन्य क्षेत्र जैसे शिक्षा, समाज सेवा, खेल, और कला क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि हासिल करने वाली प्रतिभाएं को संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अरुण सक्सेना द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर उनके कार्यों की सराहना की गई।

पत्रकार भवन के लिए सौंपा ज्ञापन– कार्यक्रम के दौरान पत्रकार प्रतिनिधियों ने अपनी एकजुटता दिखाते हुए एसडीएम मिलिंद ढोके को शहर में 'पत्रकार भवन' निर्माण की मांग को लेकर एक ज्ञापन सौंपा। एसडीएम ने इस मांग पर सकारात्मक पहल करने का भरोसा दिलाया। इस भव्य आयोजन को सफल बनाने में जम्प के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओ का विशेष योगदान रहा। विशेषकर प्रांतीय उपाध्यक्ष गिरीश सक्सेना, संभागीय अध्यक्ष अमजद खान, संभाग उपाध्यक्ष साबिर शेख, जिला अध्यक्ष महेंद्र जैन, महासचिव पिंटू बैरागी, सचिव फकरुद्दीन मुल्तानी। ब्लॉक अध्यक्ष शुभम भावसार, सुनील चौहान, विनोद माली, आरिफ मुल्तानी, और अयूब मंसूरी आदि ने विशेष योगदान दिया । कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों, आगंतुक पत्रकारों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। समारोह में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक और पत्रकार साथी उपस्थित रहे।

साहित्य सुमन से सम्मानित हुई इटारसी की साहित्यकार प्रमिला किरण

प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था साहित्य संगम तिरोड़ी द्वारा प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

।प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था साहित्य संगम तिरोड़ी द्वारा बालाघाट के मॉयल मंगल भवन में आयोजित राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन में इटारसी की सुप्रसिद्ध कवयित्री एवं साहित्यकार प्रमिला किरण को 'साहित्य सुमन' सम्मान से सम्मानित किया गया।

विगत 23 वर्षों से आयोजित हो रहा यह सम्मेलन देश भर के साहित्यकारों शिक्षाविदों और समाजसेवियों का संगम है। जहां उत्कृष्ट कार्य करने वाले चुनिंदा व्यक्तियों को प्रतिवर्ष सम्मानित किया जाता है। ऐसे गरिमामई मंच पर प्रमिला किरण का सम्मानित होना पूरे इटारसी के लिए गौरव की बात है।

बालाघाट तिरोड़ी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार दिनेश देहाती के संयोजन एवं मार्गदर्शन में संपन्न यह कार्यक्रम चार चरणों में चला। जिसमें प्रथम चरण में नवोदित कवियों को ध्यान में रखते हुए युवा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें 15 प्रतिभाशाली कवियों ने अपनी श्रेष्ठ कविता प्रस्तुत की। दूसरे चरण में साहित्यिक विचार गोष्ठी एवं परिचर्चा रखी गई। विषय था "नवोदित कवियों के लिए कवि समागम की प्रासंगिकता"। तृतीय चरण सम्मान समारोह को समर्पित था जिसमें तिरोड़ी सरपंच श्रीमती फौजिया खान के विशेष उपस्थिति थी। और अंतिम दौर में हास्य व्यंग्य गीत गजल का शानदार संगम अखिल भारतीय कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इटारसी की गजलकारा प्रमिला किरण ने भी खूब तालियां बटोरी।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

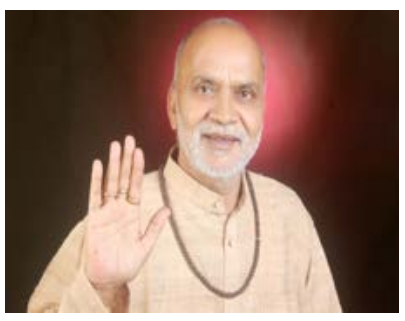

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी धाम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा का पावन काल सन् 2010 केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि असंख्य भक्तों के लिए दिव्य अनुभूतियों का अद्भुत संगम था। इसी कालखंड में घटी एक घटना श्रद्धा, विश्वास और गुरु-कृपा की महिमा को सजीव रूप में प्रकट करती है। दिल्ली के पंजाबी बाग निवासी श्री शशि कुमार गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रितु गुप्ता, दादाजी गुरुदेव (साईंखेड़ा वाले) के परम निष्ठावान भक्त हैं। वे दोनों प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में यजमान के रूप में सम्मिलित होकर विधि विधान, मंत्रोच्चार और पूर्ण आस्था के साथ पूजन-अर्चन में लगे हुए थे। उनका मन पूरी तरह भक्ति में लीन था, किंतु इसी बीच एक ऐसी सूचना प्राप्त हुई जिसने उनके हृदय को झकझोर दिया। परिवारजनों द्वारा दिल्ली में उनकी माताजी की चिकित्सीय जाँच कराई गई थी, जिसकी रिपोर्ट में कैंसर जैसी गंभीर एवं जीवन-घातक बीमारी की पुष्टि हुई। विशेषज्ञ चिकित्सकों ने स्थिति को अत्यंत नाजुक बताते हुए यह अनुमान व्यक्त किया कि जीवनकाल अत्यंत सीमित है। इस अप्रत्याशित समाचार ने पूरे परिवार को गहरे दुःख और चिंता में डाल दिया। ऐसी विषम परिस्थिति में, जब मनुष्य हर ओर से निराशा से घिर जाता है, तब सच्चे श्रद्धालु के लिए गुरु ही एकमात्र आश्रय बनते हैं। श्री शशि कुमार गुप्ता ने भी पूर्ण विश्वास के साथ दादाजी गुरुदेव की शरण ग्रहण की। उनके अंतर्मन में यह दृढ़ भावना थी कि गुरु-कृपा से असंभव भी संभव हो सकता है।

जन्माष्टमी के पावन अवसर पर प्रातःकाल जब वे दादाजी गुरुदेव के साथ दादाजी धाम मंदिर पहुंचे, उस समय वातावरण भक्ति, श्रद्धा और दिव्यता से परिपूर्ण था। उसी समय दादाजी गुरुदेव ने अपनी सहज, करुणामयी और आशीर्वादमयी वाणी में शशि जी से कहा चिंता मत करो, आपकी माताजी स्वस्थ हो जाएंगी। वचन केवल सांत्वना नहीं, बल्कि एक दिव्य आश्वासन था। इन शब्दों ने शशि जी के हृदय में नई आशा का संचार कर दिया और उनके भीतर अटूट विश्वास जागृत हो गया। इसके पश्चात जो घटित हुआ, वह सामान्य मानवीय समझ से परे प्रतीत होता है। जिनकी आयु चिकित्सकों द्वारा अत्यंत सीमित बताई गई थी, वे माताजी न केवल उस अवधि से आगे जीवित रहीं, बल्कि सन् 2017 तक उन्होंने अपेक्षाकृत स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत किया। इस पूरे समय में उन्हें किसी प्रकार की असहनीय पीड़ा या कष्ट का सामना नहीं करना पड़ा। उन्होंने अपने जीवन के शेष वर्षों को संतोष, परिवार के स्नेह और आंतरिक शांति के साथ पूर्ण किया। यह घटना केवल एक चमत्कारिक प्रसंग नहीं, बल्कि यह दर्शाती है कि जब श्रद्धा दृढ़ हो, विश्वास अटल हो और गुरु-कृपा का संरक्षण प्राप्त हो, तब जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियाँ भी परिवर्तित हो सकती हैं। गुरु का आशीर्वाद न केवल शारीरिक कष्टों को कम करता है, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान कर जीवन को नई दिशा देता है।

दादाजी गुरुदेव का यह करुणामय स्वरूप उनके उस दिव्य संकल्प को प्रकट करता है, जिसके माध्यम से वे लोक कल्याण हेतु अवतरित हुए भक्तों के दुःखों को दूर करने, उन्हें आशा प्रदान करने और उनके जीवन को सुख, शांति एवं आध्यात्मिक उन्नति से परिपूर्ण करने के लिए। यह प्रेरणादायक प्रसंग आज भी श्रद्धालुओं के लिए आस्था का स्रोत है, जो यह संदेश देता है कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना और गुरु में अटूट विश्वास जीवन की दिशा बदल सकता है।

दादाजी धाम मंदिर में जगद्गुरु आदि शंकराचार्य का जन्मोत्सव श्रद्धा एवं भक्ति के साथ संपन्न, बुधवार को भी आयोजन जारी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर, रायसेन रोड, पटेल नगर भोपाल में जगद्गुरु आदि शंकराचार्य का पावन जन्मोत्सव मंगलवार को श्रद्धा, विश्वास एवं वैदिक विधि-विधान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गर्भगृह की परिक्रमा में स्थापित पूज्य शंकराचार्य जी की प्रतिमा का विधिवत अभिषेक, पूजन, हवन एवं आरती उपस्थित श्रद्धालु भक्तों द्वारा संपन्न की गई।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भक्तजन, ट्रस्टीगण एवं सेवादार उपस्थित रहे। सभी श्रद्धालुओं ने भक्ति-भाव से पूजन में सहभागिता करते हुए पुण्य लाभ अर्जित किया तथा प्रसाद ग्रहण किया। इस पावन अवसर पर मंदिर के पट भगवान के दर्शन हेतु श्रद्धालुओं के लिए खुले रहे।

जन्मोत्सव का यह पावन आयोजन बुधवार को भी जारी रहेगा, जिसमें विशेष पूजन-अर्चन एवं धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

अभिव्यक्ति विचारयात्रा मंच" का आयोजन : प्रगतिशील युवा भारत और बुजुर्गों की भूमिका पर सार्थक विमर्श

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

"अभिव्यक्ति विचारयात्रा" श्रृंखला के तृतीय एपिसोड के अंतर्गत, जवाहर चौक स्थित डॉ अभिजीत देशमुख के सभागार में बौद्धिक विमर्श कार्यक्रम गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का विषय था— "प्रगतिशील युवा भारत और पीछे छूटते बागवान : जिम्मेदारी, संवेदना और समाधान।"कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अभिजीत देशमुख जी, अध्यक्ष – सबका सहारा वेलफेयर सोसायटी ने की।

मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार गोकुल सोनी एवं मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रख्यात पत्रकार एवं चिंतक डॉ. नवीन आनंद जोशी मंचासीन रहे।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री गोकुल सोनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, किन्तु इस विकास यात्रा में बुजुर्गों के अनुभव और मार्गदर्शन की उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने जोर देकर कहा कि परिवार और समाज को मिलकर ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जहाँ बुजुर्ग सम्मान और आत्मनिर्भरता के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। देश के विकास में जब बुजुर्गों का अनुभव और युवा शक्ति का जोश तथा टेक्नोलॉजी मिलकर काम करेंगे तभी देश समृद्ध होगा। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ अभिजीत देशमुख ने कहा कि संवेदनशील समाज ही सशक्त समाज का निर्माण करता है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि वे अपने बुजुर्गों के अनुभवों से सीख लेकर समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाएं। डॉ नवीन आनंद जोशी जी ने विषय को वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखते हुए कहा कि आधुनिकता की दौड़ में पारिवारिक मूल्यों का क्षरण एक गंभीर चुनौती है। उन्होंने समाधान के रूप में पीढ़ियों के बीच संवाद, सम्मान और सहयोग की संस्कृति को विकसित करने पर बल दिया।

विचारगोष्ठी में समाज, साहित्य और बौद्धिक जगत से जुड़े अनेक विद्वानों, साहित्यकारों एवं जागरूक नागरिकों ने अपने अनुभव व विचार व्यक्त करते हुए जो प्रश्न किए, उनका मुख्य वक्ता श्री गोकुल सोनी ने समुचित समाधान किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन एवं संयोजन श्री मनोज जैन जी द्वारा किया गया। उन्होंने पूरे आयोजन को सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से संचालित किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें बी एल गोहिया, सुनील विश्वकर्मा, सूर्य सिंह, यशवंत गोरे, मोहित मिश्रा, हरि मोहन तिवारी, संतोष मिश्रा, उपेंद्र सिंह, भानुप्रकाश त्रिपाठी, राममुनि पाल, कपिल कुमार तिवारी, संदीप पाठक, राकेश श्रीवास्तव, सुश्री रत्ना चौहान, दीपक कोहली, ललित कुमार परमार सहित अन्य सहभागी शामिल रहे। अंत में "सबका सहारा" संस्था के सचिव श्री सुबोध श्रीवास्तव जी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे बौद्धिक विमर्श समाज को सकारात्मक दिशा देने का कार्य करते हैं।

सूचना

गायत्री परिवार भोपाल के समस्त परिजनों को सूचित किया जाता है कि अखिल विश्व गायत्री परिवार के विशेष अभियान निर्मल गंगा जन अभियान (भागीरथी जलाभिषेक) के अंतर्गत जल स्वच्छता, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु गंगा सप्तमी के पावन अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

इस अभियान के अंतर्गत भोपाल में पर माँ गंगा कलश का पूजन-अर्चन, जल शुद्धि एवं स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया है।

दिनांकः 23 अप्रैल (गुरुवार)

समयः प्रातः 8:00 बजे से 9:30 बजे तक

स्थानः खतलापुरा घाट, छोटा तालाब, भोपाल

आप सभी परिजनों से निवेदन है कि समय पर उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

निवेदकः गायत्री शक्तिपीठ, गायत्री परिवार भोपाल

रेज़िन आर्ट वर्क शॉप का आयोजन 25 अप्रैल को

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के कला प्रेमियों के लिए एक विशेष अवसर प्रस्तुत है। 25 अप्रैल को ब्रूज़ो कैफे, 10 नंबर मार्केट, भोपाल में रेज़िन आर्ट वर्कशॉप का आयोजन किया जा रहा है।

इस वर्कशॉप में प्रतिभागियों को रेज़िन आर्ट की मूलभूत तकनीकों के साथ-साथ मिरर पर रेज़िन को मिक्स और उपयोग करने की विधि सिखाई जाएगी।

वर्कशॉप दो स्लॉट्स में आयोजित की जाएगीः दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक ओर दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक

प्रतिभागियों के लिए सभी आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही, कॉम्प्लिमेंट्री बेवरेजेस और स्नैक्स की भी व्यवस्था रहेगी

पंजीकरण के लिए कृपया दिए गए QR कोड को स्कैन करें। किसी भी प्रकार की जानकारी या सहायता के लिए मोबाइल न,898-944-0918 पर संपर्क करे,

करियर कॉलेज में : करियर के अवसर पर अतिथि व्याख्यान

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

करियर कॉलेज ऑटोनॉमस के वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग द्वारा बी.कॉम और बीबीए तृतीय वर्ष के छात्रों के लिए स्नातक के बाद कैरियर के अवसरों पर एक सत्र आयोजित किया गया मुख्य वक्ता प्रेस्टीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च के निदेशक डॉ. अनिल बाजपेयी ने स्नातक के बाद उपलब्ध विभिन्न कैरियर विकल्पों पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान की, जिनमें एमबीए जैसे उच्च शिक्षा विकल्प, सीए, सीएस और सीएमए जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रम और वित्त, विपणन, विश्लेषण और उद्यमिता जैसे उभरते क्षेत्र शामिल हैं उन्होंने रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कौशल विकास, इंटर्नशिप और उद्योग के अनुभव के महत्व पर जोर दिया। सत्र में छात्रों को अपनी रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप कैरियर विकल्प चुनने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला , सत्र ज्ञानवर्धक और प्रेरक था, जिससे छात्रों को अपने भविष्य के कैरियर की संभावनाओं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदमों के बारे में स्पष्टता प्राप्त करने में मदद मिली।

सतपत के तत्वाधान में स्वाध्याय के वाचन के लिए अनुमोदना पत्र

जीवन में सत्य और अहिंसा के लिए सदैव संघर्ष और त्याग करना -विद्वान सुमत भैया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सुखी रहे सब जीव जगत के,, दुख कभी न आवे,,, की पंक्तियों के साथ जगत के जन जन के कल्याण की भावना के साथ वात्सल्य मय आत्म आराधना शिविर का समापन हुआ, अपने उद्बोधन में बाल ब्रह्मचारी विद्वान सुमत प्रकाश जैन ने कहा जीवन में अपनी जीवन शैली के दौरान पाप क्रिया से बचते हुए पुण्यात्मक क्रिया करो, अपने जीवन में सत्य अहिंसा जीव दया के लिए हमेशा संघर्ष करते रहना ओर जरूरत पड़े तो इसके लिए सब कुछ न्योछावर कर देना, मन वचन काय की शुद्धि से ही परिणामों में निर्मलता आती हे आचरण पवित्र होता हे, सभी ने जिनवाणी वंदना की,मुमुक्षु मंडल के महामंत्री देवेंद्र बड़कुल संगठन मंत्री मनोज आर एम ने बताया सतपत स्वाध्याय भवन 10 नंबर अरेरा कालोनी में शिविर के समापन पर बच्चे युवा हर वर्ग के लोगो ने प्रतिदिन स्वाध्याय के लिए अनुमोदना पत्र भरे, आध्यात्मिक सत पुरुष गुरुदेव कानजी स्वामी के संदेश को आत्म सात कर जन जन तक पहुंचाने के साथ शिविर का समापन हुआ,इस अवसर पर मुमुक्षु मंडल के अध्यक्ष अशोक जैन समाज के वरिष्ठ जैन कस्तूर चन्द्र बजाज सिलवानी एस पी जैन उमरेस सिंघई मनीष आर एम विपिन एम पी टी सुरेश बज्जू पदम जैन मोहित बड़कुल आदि मौजूद थे।

हिमशिखरों का आह्वान और सनातन चेतना

बदरीनाथ (नारायण) और केदारनाथ (रुद्र) का संबंध परस्पर पूरक है। स्कंदपुराण के केदारखंड के अनुसार शिव और विष्णु के ये धाम एक ही ब्रह्म के दो स्वरूपों की अभिव्यक्ति हैं। मोक्ष धाम के रूप में प्रतिष्ठित बदरीनाथ में आदि गुरु शंकराचार्य ने लगभग 1200 वर्ष पूर्व मूर्ति की पुनर्स्थापना कर दक्षिण और उत्तर की सांस्कृतिक एकता का सूत्रपात किया था। 20 अप्रैल- बदरीनाथ-केदारनाथ यात्रा प्रारंभ दिवस आदिकालीन हिमालयी कंदराओं से निःसृत सनातन संस्कृति का प्रवाह जब उत्तरापथ की ओर अग्रसर होता है, तब वह चारधाम के रूप में मूर्तिमान हो उठता है। वैशाख शुक्ल तृतीया, जिसे लोक में अक्षय तृतीया के नाम से अभिहित किया गया है, मात्र एक तिथि नहीं अपितु कालचक्र का वह संधि स्थल है, जहां शीतकाल के सुप्त वैभव के पश्चात प्रकृति पुनर्जीवित होती है। इस वर्ष 20 अप्रैल को जब बदरी-केदार के कपाट खुलेंगे, तो वह केवल द्वारोद्घाटन नहीं, वरन जड़ता पर चैतन्य की विजय का उद्घोष होगा। इस संबंध में प्राप्य पौराणिक विवरणियों के समीचीन अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बदरीनाथ (नारायण) और केदारनाथ (रुद्र) का संबंध परस्पर पूरक है। स्कंदपुराण के केदारखंड के अनुसार शिव और विष्णु के ये धाम एक ही ब्रह्म के दो स्वरूपों की अभिव्यक्ति हैं। मोक्ष धाम के रूप में प्रतिष्ठित बदरीनाथ में आदि गुरु शंकराचार्य ने लगभग 1200 वर्ष पूर्व मूर्ति की पुनर्स्थापना कर दक्षिण और उत्तर की सांस्कृतिक एकता का सूत्रपात किया था। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में सर्वोच्च स्थान पर स्थित केदारनाथ धाम महाभारत काल के पांडवों के प्रायश्चित और मुक्ति की गाथा का साक्षी है। यहां का त्रिकोणात्मक शिवलिंग किसी मानवी कृति नहीं, अपितु प्राकृतिक दिव्य शिला का प्रतीक है। सनातन परंपरा के अनुसार यात्रा का एक निश्चित वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक क्रम है। सर्वप्रथम दर्शन शक्ति और शुद्धि के प्रतीक के रूप में यमुनोत्री एवं गंगोत्री का करने का क्रम निर्धारित है। तत्पश्चात केदारनाथ का दर्शन शिवत्व अर्थात संयम और वैराग्य के साक्षात्कार के लिए। और अंत में विष्णुत्व अर्थात शांति और मोक्ष की प्राप्ति की कामना हेतु बदरीनाथ का दर्शन। यह क्रम मन को निम्नगामी प्रवृत्तियों से मुक्त कर ऊर्ध्वगामी शिखर की ओर ले जाता है। हिमालय की दुर्गमता यात्री के धैर्य की परीक्षा लेती है, जो कि आत्म साक्षात्कार के लिए अनिवार्य शोधन प्रक्रिया है। यह यात्रा केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि देवभूमि की आर्थिकी और पारिस्थितिकी का मूलाधार है। आधुनिक काल में जहां भौतिकता का प्रसार हुआ है, वहीं इन धामों की शाश्वत ऊर्जा मनुष्य को अपनी जड़ों की ओर लौटने का मार्ग प्रशस्त करती है। 20 अप्रैल को यह तिथि हमें स्मरण कराती है कि प्रकृति और परमात्मा के सानिध्य में ही मानव का वास्तविक कल्याण निहित है। उल्लेखनीय है कि बदरी-केदार की यात्रा एक त्रिआयामी—भौतिक, मानसिक और दैविक शोध अर्थात तत्व मीमांसा के समान प्रतीत होता है। जहां हिमालय की पारिस्थितिकी, भौतिक तल और औषधीय संपदा मानव का कायाकल्प करती है, वहीं मानसिक तल मंदिर का स्थापत्य और एकांत गुफाएं चित्त की वृत्तियों का निरोध कर शांति प्रदान करती हैं, और दैविक तल खगोलीय संरेखण और नक्षत्रों की स्थिति जीव को ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जोड़ती है। अक्षय तृतीया की तिथि इन तीनों तलों के मिलन विन्दु का नाम है। हिमालय के शिखर केवल बर्फ के ढेर नहीं, बल्कि पृथ्वी पर टंगे हुए वे आध्यात्मिक दिशा सूचक हैं, जो भटकती हुई मानवता को उसके केंद्र अर्थात आत्मतत्व की ओर वापस बुलाते हैं। हिमालय की उत्तुंग शिखाओं के मध्य स्थित बदरीनाथ और केदारनाथ केवल पाषाण निर्मित देवालय नहीं, अपितु पृथ्वी के वे चुम्बकीय विन्दु हैं, जहां आध्यात्मिक ऊर्जा का घनत्व सर्वाधिक है। भू वैज्ञानिक दृष्टि से अलकनंदा और मंदाकिनी की ये घाटियां जिस सेंट्रल क्रिस्टलाइन ज़ोन में स्थित हैं, वह शोधार्थियों के लिए कौतूहल का विषय है। यहां की विशिष्ट भौगोलिक संरचना और विरल वायुमंडल मानवी चेतना को अंतर्मुखी होने के लिए विवश करती है। वैशाख शुक्ल तृतीया का चयन ऋषियों ने अनायास नहीं किया था; यह वह समय है जब सूर्य की रश्मियां उत्तरायण में अपने पूर्ण ओज के साथ इन हिम शिखरों का अभिषेक करती हैं, जिससे क्षेत्र में प्राणवायु और सात्विक तरंगों का संचार तीव्र हो जाता है। बदरीवन की पावन धरा पर नर और नारायण पर्वत केवल भौगोलिक पहचान नहीं, बल्कि मानवी पुरुषार्थ और ईश्वरीय अनुकंपा के प्रतीक हैं। नर जीवात्मा का और नारायण परमात्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके मध्य बहती अलकनंदा (ज्ञान की धारा) यह संदेश देती है कि मोक्ष प्राप्ति के लिए कर्म और ज्ञान का सामंजस्य अनिवार्य है। यहां की तप्त कुंड जैसी तापीय जलधाराएं इस सत्य को पुष्ट करती हैं कि जड़ प्रकृति के भीतर भी चैतन्य की ऊष्मा सदैव विद्यमान रहती है। केदारनाथ का विग्रह सदाशिव का वह स्वरूप है, जो अहंकार के विलय का प्रतीक है। महाभारत के पश्चात पांडवों का यहां आगमन इस मनोवैज्ञानिक सत्य को उद्घाटित करता है कि महान विजय के पश्चात भी आत्मिक शांति हेतु शिवत्व अर्थात कल्याणकारी मौन की शरण में जाना ही अंतिम विकल्प है। केदारघाटी की संरचना एक विशाल कमल के समान है, जिसके केंद्र में महादेव विराजमान हैं। यह सहस्रार चक्र के जागरण की स्थूल अभिव्यक्ति है। यहां की कठिन चढ़ाई केवल शारीरिक श्रम नहीं, बल्कि साधक के चित्त की वृत्तियों का दमन कर उसे शून्य से एकाकार करने की प्रविधि है। आदि शंकराचार्य द्वारा बदरीनाथ में दक्षिण के नंबूदरी ब्राह्मण और केदारनाथ में कर्नाटक के रावल के द्वारा पूजा किये जाने की व्यवस्था किया जाना भारत की अखंडता का सबसे प्राचीन प्रोटोकॉल है। यह सिद्ध करता है कि हिमालय केवल उत्तर भारत की सीमा नहीं, बल्कि संपूर्ण आर्यावर्त की आध्यात्मिक नाभि है। आज के आपाधापी भरे युग में अक्षय तृतीया से प्रारंभ होने वाली यह यात्रा आधुनिक मानव को स्व से साक्षात्कार करने का अवसर प्रदान करती है। यह यात्रा भौतिकता की मरुभूमि से निकलकर शाश्वत सत्य के महासागर में निमज्जन करने का एक अनुष्ठान है। अक्षय तृतीया की पावन तिथि एक नए चक्र का प्रारंभ है। जब कपाट खुलते हैं, तो वह केवल एक मंदिर के द्वार नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर की अवरुद्ध चेतना के द्वार होते हैं। बदरी-केदार की यह यात्रा सात्विक जीवन पद्धति, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और आत्मिक शोधन का वह शाश्वत मार्ग है, जो युगों-युगों से अपरिवर्तित और अक्षय बना हुआ है। बदरीनाथ और केदारनाथ के मंदिरों का निर्माण केवल पाषाणों का संचय नहीं, अपितु एक सूक्ष्म यंत्र की रचना है। केदारनाथ मंदिर का स्थापत्य रेखा-शिखर शैली का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसकी विशाल शिलाओं को इंटरलाकिंग पद्धति से जोड़ा गया है, जिसमें किसी गारे या सीमेंट का प्रयोग नहीं है। यह तकनीकी शोध का विषय है कि कैसे सहस्राब्दियों से यह संरचना भीषण हिमपात और 2013 जैसी प्रलयंकारी आपदाओं के मध्य अडिग रही। मंदिर का गर्भगृह मूलाधार चक्र का प्रतीक है और उसका उत्तुंग शिखर सहस्रार का, जो आकाशीय ऊर्जा को संचित कर सीधे विग्रह (शिवलिंग) तक संप्रेषित करता है। बदरीनाथ धाम का मंदिर शंकु के आकार में निर्मित है, जो मेरु पर्वत की प्रतिकृति माना जाता है। भगवान नारायण की पद्मासनस्थ प्रतिमा के नीचे श्रीयंत्र उत्कीर्ण है। स्थापत्य शास्त्र के अनुसार मंदिर का सिंहद्वार और उसके ऊपर स्थित स्वर्ण कलश सूर्य की प्रथम किरणों को इस प्रकार परावर्तित करते हैं कि गर्भगृह में एक विशिष्ट आभा मंडल निर्मित होता है। यह स्थापत्य मनुष्य के अंतर्मन में विष्णुत्व अर्थात व्यापकता के भाव को जाग्रत करने की एक मनोवैज्ञानिक प्रविधि है। केदारनाथ के मंदिर की बाहरी दीवारों पर उत्कीर्ण आकृतियां और भीतर की गहन शांति एक विरोधाभास प्रस्तुत करती है। बाहर की कठोरता प्रकृति की विकरालता को दर्शाती है, जबकि भीतर का अंधकार और घी के दीयों का मंद प्रकाश जीव को अंधकार से ज्योति अर्थात तमसो मा ज्योतिर्गमय की ओर ले जाने का पथ है। यहां प्रयुक्त कत्यूरी स्थापत्य शैली यह सिद्ध करती है कि तत्कालीन शिल्पकार न केवल पत्थर के पारखी थे, बल्कि वे ध्वनि विज्ञान के भी ज्ञाता थे, जिससे मंत्रोच्चार की प्रतिध्वनि भक्त के हृदय की धड़कन से एकाकार हो जाती है। अक्षय तृतीया को जब इन मंदिरों के द्वार खुलेंगे, तो वह केवल एक भौतिक द्वार का खुलना नहीं होगा, बल्कि उस वास्तु पुरुष का जागरण होगा, जो शीतकाल की समाधि से उठकर पुनः सृष्टि के संचालन में अपनी ऊर्जा का दान करेगा। हिमालय के ये मंदिर मानव निर्मित लघु प्रतिरूप हैं, जो उस विराट परम तत्व की ओर संकेत करते हैं।

-अशोक 'प्रवृद्ध'

पैथेटिक भारत, बेचारे लोग!

मैं शनिवार शाम एक शादी समारोह में था। लोगों को सुनते-देखते हुए मौके की फील ले रहा था। तभी एक रिटायर अफसर ने पूछा- कुछ खबर है, मोदीजी ने आठ बजे क्या कहा? अब मैं न भाषण सुनता हूं और न सोशल मीडिया देखता हूं, सो बेखबर था। पर स्वयंस्फूर्त मैंने कहा, क्या कहेंगे? कहा होगा, देखो, नारी वंदन बिल को विपक्ष ने पास नहीं होने दिया! और वही था। सोचें, भारत, भारत का प्रधानमंत्री, लोकशासन और लोकव्यवहार कब इतना प्रीडिक्टेबल था जितना आज है! क्योंकि भारत आज वह देश है, जिसके जीने में धोखे, झूठ के अलावा कुछ भी नहीं है। भारत न केवल झूठ में जीता है, बल्कि चौबीसों घंटे झूठ के उस प्रदूषण में जीता है, जिससे 140 करोड़ लोगों को न केवल भूलने की बीमारी हो गई है, बल्कि झूठ का कार्बन देश की अनिवार्यता है।

और जैसे भारत के भीतर सब प्रीडिक्टेबल है वैसे विश्व राजधानियों में भारत का अर्थ,रीति-नीति सब प्रीडिक्टेबल है। सभी देशों को मालूम है कि उसके कैसे नेता है और वे किस आचारण और लुढकते या झूठे है।

सोचें, बारीकी से यह सत्य बूझें कि नरेंद्र मोदी, अमित शाह दिन के चौबीस घंटों में से कितने घंटे नए-नए झूठ, नई-नई झूठी चाल, नए-नए झूठे मोहरे, नए-नए झूठे हेडलाइन, नैरेटिव, बाइट बनवाने, ब्रीफिंग करवाने में खपाते होंगे? दस-बीस या आधा घंटा भी ये लोग लोगों के सत्य, देश के सत्य, देश की ऑक्सीजन का ख्याल नहीं करते होंगे।

कैसा भोंडा, छिछला, बेशर्म जुमले के 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023' का तमाशा था! फिलहाल का सत्य सिलेंडर की चिंता में ग्रामीण, गरीब के घर-चूल्हे में औरतों का जीवन है। अनुभव करना हो तो दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी इलाकों में रह रही महिलाओं, घरों में काम करने वाली कामवालियों से बात करें- सब बेहाल, बेचैनी के चेहरे हैं। हाल में नोएडा में मजदूरों के शोषण के किस्सों में यह जानकारी भी मिली कि एनसीआर क्षेत्र में लेबर सेवा सप्लायर (नाई, टॉयलेट, सफाई, घरेलू कामवालियों, खाना-सामान घर पहुंचाने जैसी सर्विस की लाखों-करोड़ों नौजवान भीड़) ऐप आधारित कंपनियों ने महिला कर्मियों की बेइंतहा भीड़ बढ़ाई है, लेकिन बेचारियों को जहां मात्र आठ-दस हजार रुपए मिलते हैं वही उन्हें कार्यक्षेत्र में पेशाब करने की सामान्य टॉयलेट जैसी बुनियादी सुविधाएं भी नहीं हैं।

और मोदीजी दिखला रहे नारी शक्ति वंदन! इससे उन्हे उम्मीद हैं कि दिल्ली या देश भर से वोट देने के लिए लौट रही ग्राम्य बंगाल की गरीब महिलाएं मोदी को वोट देंगी क्योंकि वे उन्हें एमएलए, एमपी बनाना चाहते हैं, जबकि ममता की पार्टी, कांग्रेस और राहुल गांधी ने अड़ंगा लगाया। सोचें, देश की एकमात्र दबंग, महिला शक्ति की पर्याय ममता बनर्जी को मिटाने के लिए मोदी सरकार ने बारह वर्षों में जैसे झूठ, जैसे प्रपंच किए, वह किसी भी कसौटी में, किसी भी तरह की मानवीयता, राजनीतिक-नैतिक मर्यादा में क्या जायज है? लेकिन झूठ, अहंकार, भूख की इंतहां देखें कि देश में एक भी महिला नेत्री का सत्ता में रहना इसलिए बरदाश्त नहीं है क्योंकि वह विपक्ष की है।

ममता में दस खराबियां हो सकती हैं। कहते है बंगाल में मुसलमान फैल रहे हैं, दबंगई दिखा रहे हैं, हिंदू बेचारे हो गए है, लेकिन यदि पूरे देश में ही हिंदू बेरोजगारी, सिलेंडर, नौकरी, दिन में बारह घंटों की अमानवीय मजदूरी और दस-बारह हजार महीने की पगार की बेचारगी वाली जिंदगी जी रहे है तो पूरे देश में भी हिंदू कैसा जीवन जीता हुआ है? एक और हकीकत। बेसमय के बेतुके 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023' पर बंगाल, दिल्ली में कयासबाजी है कि मोदी-अमित शाह-चुनाव आयोग ने बंगाल का चुनाव फिक्स कर दिया है। मतलब भाजपा सौ टका जीत रही है, तो मोदीजी ने लोकसभा में नारी शक्ति बिल लाकर, विपक्ष से हारने की नैरेटिव की प्लानिंग करके, नतीजों के बाद का यह निष्कर्ष पहले की बना दिया है कि विपक्ष ने नारी शक्ति बिल पास नहीं होने दिया तो बंगाल की औरतों ने ममता को हराने की ठानी। बंगाल की नारियों ने मोदी के राजतिलक की कसम खाई इसलिए वोटर लिस्ट की हेराफेरी से नहीं, बल्कि बंगाल में भाजपा की जीत असल है!

ओह! भारत आज कितने लेवल के झूठों में जी रहा है! इसलिए क्योंकि आबोहवा में सत्य का ऑक्सीजन लगभग खत्म है। किसी भी तरह के नैरेटिव में शासन, राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज, संस्था, रिश्तों में मंशागत सत्य झलकेगा ही नहीं।

सो, भारत अब उस मुकाम पर है, जिसमें झूठ की बोली के तरह-तरह के नैरेटिव जीवन की मानों अनिवार्यता हो। नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम रात के आठ बजे के संबोधन में ममता बनर्जी से अधिक कांग्रेस को गालियां दीं। क्यों? इसलिए कि यदि ममता बनर्जी जीत गईं तो संभव है आगे चंद्रबाबू नायडू की तरह ममता का भी उपयोग हो। या ममता पर ही फोकस रखा, और ममता को यदि इश्यू बनाने का मौका मिला, तो बांग्ला महिला वोट में भाजपा को लेने के देने भी पड़ सकते है। मतलब नरेंद्र मोदी को सत्ता के शतरंज के हर खाने के विकल्पों में तिकड़में सोचनी होती है। हर दांव, हर भाषण में प्रपंच झूठ ऐसे हैं कि प्रतिक्रियाएं भी झूठ से लथपथ!

सत्य की तनिक भी गुंजाइश नहीं। तभी अब चुनाव कवर करने, लोगों के सत्य को बूझने का न पत्रकारों में कोई कौतुक है और न जनता में चुनावों को लेकर पहले जैसा उत्साह। भारत की यह नई विचित्र तस्वीर है। एक तस्वीर है जो बोली जाती है और एक है जो जी जाती है मगर जो अब हमेशा ओझल रहती है।

एक तरफ जुमलों, भाषणों, ललकारों, हवाबाजी की ताकत का शोर है। और इससे वैश्विक मायनों में भी भारत पैथेटिक है। दुनिया में वह पूरी तरह अप्रासंगिक है। प्रमाण पड़ोस की खाड़ी का युद्ध है। इसने भारत का वह सत्य उजागर किया है, जिससे दुनिया की हर राजधानी में बूझा जा रहा होगा कि भारत काम का न काज का, दुश्मन अनाज का। याद करें, पिछले बारह वर्षों में विश्व शक्ति, विश्व गुरु, विकसित अर्थव्यवस्था की हवाबाजी तो दुनिया का हर नेता, हर देश मानों मोदी को सलामी देता हुआ! भारत जी-20, ब्रिक्स के नेता के अहंकार में डूबा हुआ कभी यह कहता हुआ कि यूरोप को अक्ल नहीं तो कभी पाकिस्तान को दलाल बताता हुआ। इतना ही नहीं, ट्रंप की सरकार बनवाने के लिए भी नरेंद्र मोदी का अमेरिका की जमीन में यह नारा लगवाना कि अबकी बार ट्रंप सरकार। मतलब अमेरिका में मनचाही सरकार बनवा दे रहे! सो, थोथा चना बाजे घना- झूठों का वह रेला, जिसमें बातें बड़ी-बड़ी, लेकिन परीक्षा का समय आया तो मुंह चुरा कर दुबके हुए।

इसलिए आश्चर्य नहीं कि दूसरे देशों में वहां के प्रधानमंत्री, सरकारें तेल-ईंधन, गैस, महंगाई, लड़खड़ाती विकास दर पर राष्ट्र को भाषण देते हुए है या उनकी संसद में ईंधन संकट विचार-बहस है वही प्रधानमंत्री मोदी और भारतीय संसद ने नारी वंदना में शक्ति परीक्षण का अखाड़ा सजाया।

ऐसे में बेचारे लोगों का यह देखना, सोचना संभव ही नहीं कि पाकिस्तान राष्ट्र-राज्य ने कैसे संकट को अपना अवसर बनाया।

पता है, एक महीने में पाकिस्तान की सेना खाड़ी में कितनी जगह अपने सैनिक अड्डे बनाते हुए है? भारत के प्रधानमंत्री ने खाड़ी के देशों के राष्ट्रीय सम्मान की कई कंठमालाएं अपने गले में पहनीं। पर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री और उनका जनरल मुनीर पाकिस्तान के झंडे को सऊदी अरब, कतर में सैनिक उपस्थिति से गाड़ रहे हैं। पाकिस्तान वैश्विक पंच बना है। चीन और अमेरिका का वह भरोसेमंद है, तो ईरान, रूस भी उस भरोसा करते हुए, उसे समर्थ मानते हुए!

खाड़ी का युद्ध साफ कर दे रहा है कि अमेरिका और चीन की दो धुरी में अब विश्व राजनीति हैं। पाकिस्तान न केवल इन दोनों का, बल्कि इस्लामी-अरब देशों का एक तरह से संरक्षक देश भी बन बैठा है। रातों रात संकट पैदा हुआ और रातों रात दुनिया की नई तस्वीर उभरी। इस तस्वीर में न तो भारत और न नरेंद्र मोदी।

मोदी कहां चले गए? वे असम, बंगाल को जीत रहे हैं! वे इन राज्यों में कथित दुश्मनों, पाकिस्तान की पर्यायी भीड़ को हराने की आवश्यकता का वह नैरेटिव बनाए हुए हैं, जिसका निचोड़ है- न केवल पैथेटिक भारत, भारत की पैथेटिक लड़ाइयां और इनके शोर के कार्बन के मारे बेचारे लोग!

बेचारे लोगों को भक्त कहें या विरोधी, संतुष्ट या असंतुष्ट—असल बात यह है कि पृथ्वी पर युद्ध से सर्वाधिक प्रभावित जनसंख्या यदि कोई है, तो वे भारत के बेचारे लोग हैं। जबकि मोदी सरकार, शासन, व्यवस्था इन्हें बेचारा नहीं मानती। इनके झूठ में यह वह हिंदू ताकत है, हिंदू गौरव है, विश्वगुरुता का वह जयघोष है, जिस पर दुनिया हतप्रभ है। इसलिए बेचारे लोगों का जीवन, उसकी कराह, दिक्कतें, प्रतिध्वनियां अनसुनी, अनसमझी हैं। भाव यह कि ऐसा है भी तो क्या हुआ, मोदीजी है न! लोग जिंदा तो हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार तो है। और बाजार की खातिर रोड, हाईवे, एक्सप्रेसवे, बिजली का इंफ्रास्ट्रक्चर का विकसित भारत भी है।

क्या यह पैथेटिक भारत की दयनीयता का प्राथमिक सत्य नहीं है? भारत दुनिया का बाजार बन गया, मगर इसका न भान है और न बेचारे लोगों के भीतर बाजार में अपने स्थान, दशा-दिशा का बोध और विचार की गुंजाइश।

तभी पैथेटिक भारत में कोई जवाबदेह नहीं है। विश्व में भारत मनुष्यों का वह समाज है, जिसने लोकतंत्र में रहते हुए भी अपने यथार्थ से असहज होना छोड़ दिया है। और यही पैथेटिक भारत और बेचारी भीड़ का इक्कीसवीं सदी का सत्य है।

-हरिशंकर व्यास

केंद्रीय सतर्कता आयोग से क्या बना!

सीबीआई द्वारा जांचे गए 7,072 भ्रष्टाचार के मामले अदालतों में लंबित हैं, जिनमें से 379 मामले 20 वर्ष से अधिक पुराने हैं। 2,660 मामले 10 वर्ष से ज्यादा लंबित हैं। यह आंकड़ा न केवल न्यायिक प्रक्रिया की धीमी गति को दर्शाता है, बल्कि सीवीसी की निगरानी वाली पूरी व्यवस्था की कमजोरियों को भी उजागर करता है। सभी जानते हैं कि भारत में भ्रष्टाचार की जड़ें गहरी हैं। सरकारी मशीनरी में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए 1964 में स्थापित केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) आज भी भ्रष्टाचार विरोधी लड़ाई का प्रमुख हथियार माना जाता है। लेकिन हाल के वर्षों में सीवीसी के पास लंबित मामलों की संख्या ने चिंता का विषय बना दिया है। सीवीसी की 2024 की वार्षिक रिपोर्ट (जो 31 अगस्त 2025 को जारी की गई और 31 दिसंबर 2024 तक के आंकड़ों पर आधारित है) के अनुसार, सीबीआई द्वारा जांचे गए 7,072 भ्रष्टाचार के मामले अदालतों में लंबित हैं, जिनमें से 379 मामले 20 वर्ष से अधिक पुराने हैं। 2,660 मामले 10 वर्ष से ज्यादा लंबित हैं। यह आंकड़ा न केवल न्यायिक प्रक्रिया की धीमी गति को दर्शाता है, बल्कि सीवीसी की निगरानी वाली पूरी व्यवस्था की कमजोरियों को भी उजागर करता है। विभागीय जांच, अनुशासनिक कार्यवाही और अभियोजन स्वीकृति में देरी के कारण आम नागरिक का भ्रष्टाचार विरोधी संस्थानों में विश्वास डगमगाता जा रहा है। गौरतलब है कि सीवीसी स्वयं जांच एजेंसी नहीं है। यह शिकायतों की समीक्षा करता है, विभागीय मुख्य सतर्कता अधिकारियों (सीवीओ) को निर्देश देता है और सीबीआई को जांच सौंपता है। लेकिन वास्तविक कार्यवाही अन्य एजेंसियों पर निर्भर है। पहला कारण है मानव संसाधनों की कमी। सीवीसी के पास सीमित स्टाफ है, जबकि केंद्रीय मंत्रालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और बैंकों में हजारों मामले आते हैं। सीवीओ अक्सर अंशकालिक होते हैं और उनके पास अन्य जिम्मेदारियां भी होती हैं। दूसरा, प्रक्रियागत देरी। प्रारंभिक जांच से लेकर प्रमुख दंड की अनुशंसा तक कई चरण हैं। सीवीसी ने 2020 में समय-सीमा निर्धारित की थी, लेकिन मंत्रालय अक्सर अभियोजन स्वीकृति में देरी करते हैं। 2024 रिपोर्ट में ही 46 संगठनों से 200 मामले अभियोजन स्वीकृति के लिए लंबित बताए गए। तीसरा, अदालती लंबितता। भारत में कुल 5.5 करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं। भ्रष्टाचार के मामले जटिल होते हैं। साक्ष्य इकट्ठा करना, गवाहों की उपलब्धता और राजनीतिक दबाव, आदि इन सबके कारण ट्रायल सालों तक खिंच जाते हैं। चौथा कारण संस्थागत। सीवीसी की सिफारिशें सलाहकारी होती हैं, बाध्यकारी नहीं। 2024 में 23 महत्वपूर्ण मामलों में विभागों ने सीवीसी की सलाह को कमजोर कर दिया या नजरअंदाज कर दिया। यह स्थिति 'विनीत नारायण' मामले (1998) में सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बावजूद बनी हुई है, जिसके परिणामस्वरूप मौजूदा सीवीसी एक्ट, 2003 बना। कोर्ट ने सीवीसी को स्वायत्तता देने के लिए कहा था, लेकिन कानून में इसे पर्याप्त दांत नहीं दिए गए। नतीजा—सीवीसी को 'दंतहीन शेर' कहा जाने लगा।

सुप्रीम कोर्ट के 'विनीत नारायण' फैसले ने सीवीसी को 'वैधानिक निकाय' का दर्जा दिलाया। चयन समिति में प्रधान मंत्री, गृह मंत्री और विपक्ष के नेता शामिल हैं, ताकि राजनीतिक हस्तक्षेप रोका जा सके। लेकिन पी जे थॉमस मामले (2011) में कोर्ट ने 'संस्थागत अखंडता' पर जोर दिया। फिर भी आज सीवीसी को दंतहीन क्यों माना जाता है? क्योंकि कानून में सीवीसी को स्वतंत्र जांच का अधिकार नहीं दिया गया। यह सीबीआई पर निर्भर है, जो स्वयं राजनीतिक दबाव में आ सकती है।सिफारिशें बाध्यकारी नहीं हैं, इसलिए विभाग अनुशासनिक कार्यवाही में अपनी मर्जी चला सकते हैं। सीवीसी की सीमा 'ग्रुप ए' अधिकारियों और पीएसयू तक सीमित है। मंत्रियों और सांसदों पर इसका अधिकार नहीं। संसाधनों की कमी, स्टाफ की अपर्याप्तता और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी ने इसे कमजोर बना दिया। ऐसे में यह कहना ग़लत नहीं होगा कि सुप्रीम कोर्ट के इरादे को कानून ने पूरा नहीं किया, नया गठन स्वायत्तता का दिखावा भर है।

सवाल उठता है कि समस्या जटिल है, लेकिन क्या समाधान संभव है? जहाँ चाह वहाँ राह, सीवीसी ने पहले ही ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया है। इसमें सभी विभागीय जांचों को सीवीसी पोर्टल पर अनिवार्य रूप से दर्ज किया जाए और AI आधारित ट्रैकिंग सिस्टम लगाया जाए, ताकि हर चरण की समय-सीमा की निगरानी हो। सीवीसी की 2020 की गाइडलाइंस को कानूनी रूप दें, अभियोजन स्वीकृति 3 महीने में अनिवार्य हो।

देरी पर विभागीय अधिकारियों पर दंड का प्रावधान हो। भ्रष्टाचार के मामलों के लिए विशेष अदालतें बढ़ाई जाएं और सीबीआई-सीवीसी मामलों को प्राथमिकता दी जाए। सीवीसी को अधिक टेक्निकल एग्जामिनर्स और जांच अधिकारियों की नियुक्ति की जाए। सीवीसी सिफारिशों को आंशिक रूप से बाध्यकारी बनाया जाए, जैसे प्रमुख दंड की अनुशंसा को केवल उच्च स्तरीय समिति ही बदल सके।

उल्लेखनीय है कि जब भी किसी विभाग से कुछ उम्मीद की जाती है तो वो हमेशा मानव संसाधनों की कमी का बहन बनाते हैं। परंतु शायद सीवीसी जैसे बड़े संगठनों को इस बात की जानकारी नहीं है कि देश भर में सेवानिवृत अधिकारियों की एक अनूठी ताकत है जो अक्सर अनदेखी रह जाती है। गौरतलब है कि इन रिटायर्ड आईएएस, आईपीएस, आईआरएस या इंजीनियरिंग व बैंकिंग सेवाओं के अधिकारियों के पास 30-40 वर्ष की सेवा का अमूल्य अनुभव है। वे विभागीय प्रक्रियाओं की बारीकियां जानते हैं। कौन सा नियम किस तरह का 'लूपहोल' पैदा करता है, फाइल कैसे घुमाई जाती है, टेंडर में घोटाला कैसे होता है। वे दस्तावेजों को देखकर तुरंत अनियमितताएं पकड़ लेते हैं, जो युवा अधिकारियों को मुश्किल लगती हैं। सेवानिवृत्त अधिकारी सीवीओ के रूप में या सलाहकार के रूप में काम कर सकते हैं। वे प्रशासनिक कार्यप्रणाली को खूब समझते हैं, इसलिए अनुशासनिक कार्यवाही में उचित सलाह दे सकते हैं। जो कि न्यायसंगत लेकिन सख्त साबित हो सकती है।

सीवीसी को एक 'रिटायर्ड ब्यूरोक्रेट्स एडवाइजरी पैनल' बनाना चाहिए, जहां अनुभवी अधिकारी पार्ट टाइम आधार पर जटिल मामलों की समीक्षा करें। इससे न केवल लंबितता कम होगी, बल्कि युवा स्टाफ को मेंटरशिप भी मिलेगी। उनकी निष्पक्षता और अनुभव सीवीसी को विश्वसनीय बनाएगा।

सीवीसी में लंबितता सिर्फ आंकड़ों की समस्या नहीं, बल्कि लोकतंत्र की विश्वसनीयता की समस्या है। सुप्रीम कोर्ट के 'विनीत नारायण' के फैसले ने जो सपना देखा था, उसे पूरा करने के लिए सीवीसी एक्ट में संशोधन जरूरी है। सेवानिवृत्त नौकरशाहों को सक्रिय रूप से जोड़कर, डिजिटल ट्रैकिंग और बाध्यकारी सिफारिशों से सीवीसी को मजबूत बनाया जा सकता है। तभी भ्रष्टाचार पर लगाम लगेगी और 'दंतहीन शेर' सच्चा शिकारी बनेगा। सरकार, न्यायपालिका और नागरिक समाज को मिलकर इस दिशा में कदम उठाने होंगे। अन्यथा, भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना अधूरा रह जाएगा।

-विनीत नारायण

ईरान ने कई बार संघर्ष-विराम तोड़ाः ट्रंप के बयान का मतलब क्या ? इस्लामाबाद शांति वार्ता पर संकट

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि ईरान ने कई बार संघर्ष-विराम का उल्लंघन किया है। उनका यह बयान तब आया है, जब अमेरिका-ईरान शांति वार्ता के दूसरे दौर पर संशय बना हुआ है और दोनों के बीच जारी संघर्ष विराम चंद घंटे में खत्म होने वाला है। ईरान ने संघर्ष विराम खत्म होने के बाद अमेरिकी नाकाबंदी के खिलाफ सख्त सैन्य कार्रवाई की चेतावनी दी है। अमेरिका ने भी ईरान के बंदरगाहों की नाकाबंदी हटाने से इनकार किया है। इस बीच ईरान की सरकारी मीडिया इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ब्रॉडकॉस्टिंग (IRIB) ने बताया है कि उनके देश ने अमेरिका से बातचीत के लिए कोई भी डेलिगेशन पाकिस्तान नहीं भेजा है। ईरान ने उन रिपोर्टों का खंडन किया जिनमें कहा गया था कि उसने अमेरिका के साथ वार्ता के लिए पाकिस्तान में एक प्रतिनिधिमंडल भेजा है। आईआरआईबी ने कहा कि कोई भी ईरानी प्रतिनिधिमंडल, चाहे आधिकारिक हो या अनौपचारिक, वार्ता के लिए इस्लामाबाद नहीं गया है। ब्रॉडकास्टर ने उन हालिया मीडिया रिपोर्टों को खारिज कर दिया जिनमें यह सुझाव दिया गया था कि तेहरान और वाशिंगटन के बीच पाकिस्तान में वार्ता की योजना बनाई जा रही है। आईआरआईबी ने ईरानी अधिकारियों के पाकिस्तान जाने और बैठकों के निर्धारित कार्यक्रम संबंधी दावों को भी 'गलत' बताते हुए खारिज कर दिया। ऑपरेशन मिडनाइट हैमर ईरान में मौजूद न्यूक्लियर डस्ट साइट्स का पूरी तरह से सफाया था। इसलिए, उन जगहों की खुदाई करना एक लंबा और मुश्किल काम होगा। फेक न्यूज CNN, और दूसरे भ्रष्ट मीडिया नेटवर्क और प्लेटफॉर्म, हमारे महान पायलटों को वह श्रेय नहीं देते जिसके वे हकदार हैं—वे हमेशा उन्हें नीचा दिखाने और छोटा करने की कोशिश करते रहते हैं—लूजर्स। वॉशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका और ईरान के बीच बातचीत का दूसरा दौर अब अनिश्चित हो गया है। ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि ईरानी अधिकारियों ने संकेत दिया है कि अमेरिका की ओर से ईरान के झंडे वाले एक जहाज को जब्त किए जाने के बाद वे इस बातचीत में शामिल नहीं हो सकते हैं। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाकाई ने सोमवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि अब तक, हमने बातचीत के अगले दौर के बारे में कोई फैसला नहीं किया है। यह बातचीत ऐसे समय में हो रही है जब अमेरिका और ईरान के बीच दो हफ्ते का संघर्ष-विराम खत्म होने वाला है। इससे दोनों पक्षों पर किसी समझौते पर पहुंचने का दबाव बढ़ गया है। सीएनएन के अनुसार, इस अनिश्चितता को और बढ़ाते हुए, ट्रंप के सार्वजनिक बयानों और सोशल मीडिया पोस्ट ने इस नाजुक बातचीत को और भी पेचीदा बना दिया है। दोनों पक्ष सात हफ्ते से चले आ रहे संघर्ष को खत्म करने के लिए किसी समझौते के काफी करीब लग रहे थे। लेकिन ट्रंप ने सार्वजनिक रूप से दावा किया कि ईरान कुछ अहम शर्तों पर सहमत हो गया है, जबकि अधिकारियों का कहना था कि उन शर्तों को अभी अंतिम रूप नहीं दिया गया था। ईरानी अधिकारियों ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए इन दावों को खारिज कर दिया और इस बात पर संदेह जताया कि क्या बातचीत का अगला दौर आगे बढ़ पाएगा। बातचीत से परिचित एक व्यक्ति ने सीएनएन को बताया कि ईरानियों को यह बात पसंद नहीं आई कि अमेरिकी राष्ट्रपति सोशल मीडिया के जरिए बातचीत कर रहे थे और ऐसा दिखा रहे थे जैसे उन्होंने उन मुद्दों पर सहमति दे दी हो जिन पर वे अभी तक सहमत नहीं हुए थे। बदलती समय-सीमाओं और अमेरिका से मिलने वाले मिले-जुले संकेतों ने इस भ्रम को और भी बढ़ा दिया है। ट्रंप कभी यह संकेत देते हैं कि समझौता बस होने ही वाला है, तो कभी चेतावनी देते हैं कि अगर बातचीत विफल रही तो फिर से सैन्य कार्रवाई की जाएगी। वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार, ट्रंप के बुधवार के बाद संघर्ष विराम को आगे बढ़ाने की संभावना कम है, जिससे कूटनीतिक प्रयासों में और भी तेजी आ गई है। रिपोर्टों के अनुसार, ट्रंप ने यह भी चेतावनी दी है कि अगर ईरान अमेरिका की शर्तों पर सहमत नहीं होता है, तो उसे पुलों और बिजली संयंत्रों जैसे अहम बुनियादी ढांचों को निशाना बनाने वाले हमलों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि, ईरान ने जोर देकर कहा है कि वह दबाव में आकर बातचीत नहीं करेगा। ईरान की संसद के स्पीकर और एक अहम वार्ताकार मोहम्मद बाकिर गालिबफ ने कहा कि तेहरान 'धमकियों के साये में' बातचीत स्वीकार नहीं करेगा।

नमस्ते से दिल जीता! दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ने विदाई के वक्त हाथ जोड़कर किया भारत का शुक्रिया

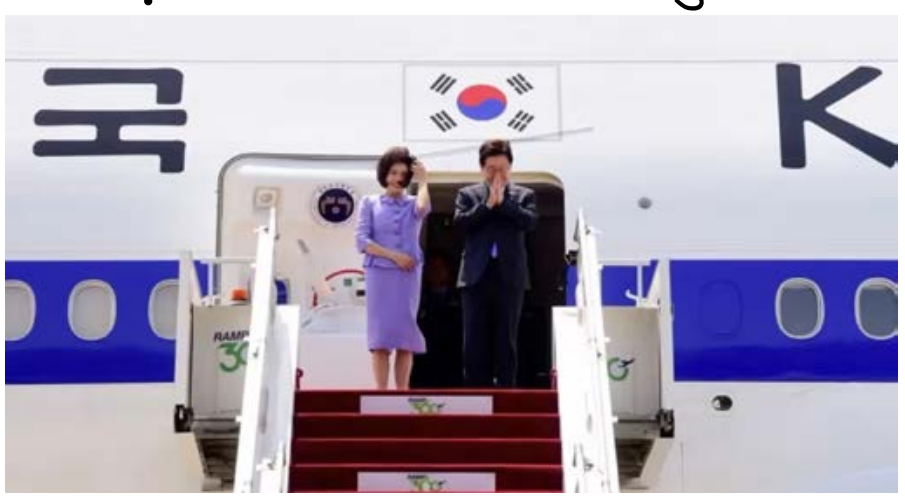

एजेंसी नई दिल्ली

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ली जे म्युंग का भारत दौरा सकारात्मक नतीजों के साथ संपन्न हो गया, जिसने दोनों देशों के संबंधों को नई मजबूती दी है। अपनी विदाई के दौरान राष्ट्रपति म्युंग ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया, जो भारतीय परंपरा के प्रति सम्मान का प्रतीक माना जाता है। इस यात्रा के दौरान भारत और दक्षिण कोरिया के बीच बुनियादी ढांचे, व्यापार, तकनीक और निवेश जैसे अहम क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी। दोनों देशों ने साझेदारी को और गहरा करने के लिए भविष्य की दिशा तय की, जिससे द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊर्जा मिलने की उम्मीद है। राष्ट्रपति ली जे म्युंग को विदा करने के लिए भारत की ओर से केंद्रीय परिवहन राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा मौजूद रहे। इस दौरे ने भारत-दक्षिण कोरिया रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत आधार देने का काम किया है। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ली जे म्युंग ने मंगलवार को भारत की अपनी तीन दिन की राजकीय यात्रा खत्म की और अब वे वियतनाम के लिए रवाना हो गए। विदेश मंत्रालय (एमईए) के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि राष्ट्रपति ली की भारत यात्रा से प्रमुख क्षेत्रों में ठोस परिणाम मिले और इसने एक फ्यूचर ओरिएंटेड एजेंडे के साथ द्विपक्षीय साझेदारी को और अधिक मजबूत आधार प्रदान किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर लिखा, 'यह एक सफल यात्रा संपन्न हुई। राष्ट्रपति ली जे म्युंग भारत से रवाना हो गए हैं। उन्हें सड़क, परिवहन और राजमार्ग तथा कॉर्पोरेट मामलों के राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने विदाई दी। इस यात्रा से प्रमुख क्षेत्रों में ठोस परिणाम मिले और इसने एक भविष्य-उन्मुखी एजेंडे के साथ भारत-दक्षिण कोरिया साझेदारी को और अधिक मजबूत आधार प्रदान किया।'अब राष्ट्रपति ली बुधवार को हनोई में वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम से मुलाकात करेंगे। दोनों नेता इससे पहले अगस्त में भी मिले थे, जब तो लाम दक्षिण कोरिया की यात्रा पर गए थे। ली गुरुवार को वियतनाम के प्रधानमंत्री ले मिन्ह हुंग और नेशनल असेंबली के चेयरमैन ट्रान थान मान से भी मिलेंगे। इसके अलावा वे एक बिजनेस फोरम में हिस्सा लेंगे, जहां दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा होगी। इसके बाद वे शुक्रवार को दक्षिण कोरिया लौट जाएंगे।

फिलीपींस ने निकाली ब्रह्मोस, छटपटा उठा चीन

एजेंसी मनिला

दक्षिण चीन सागर में चाइना की दादागिरी को करारा जवाब मिलने वाला क्योंकि भारत से ब्रह्मोस मिसाइल मिलने के बाद अब फिलीपींस अपनी ताकत का प्रदर्शन करने जा रहा है। दुनिया की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस अब फिलीपींस और अमेरिका के बीच होने वाले सबसे बड़े सैन्य अभ्यास बालीट्टन में अपना दम दिखाएगी। दरअसल फिलीपींस पहली बार इस मिसाइल का सिमुलेशन फायरिंग करने जा रहा है। जो कि बड़े सैन्य अभ्यास बालिका के दौरान होगा। यह असली फायरिंग नहीं होगी लेकिन पूरी तैयारी वैसी ही रहेगी। रडार ऑन, टारगेट लॉक, लॉन्च सिस्टम एक्टिव सब कुछ असली युद्ध जैसे माहौल में। दक्षिण चीन सागर में चीन और फिलीपींस के बीच लंबे समय से टकराव की स्थिति है। द्वीपों और समुद्री इलाकों को लेकर विवाद लगातार बढ़ रहा है और चीन की आक्रामक रणनीति को फिलीपींस अपने लिए सबसे बड़ा खतरा मानता है। यही वजह है कि फिलीपींस ने भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीदी ताकि चीन को साफ संदेश दिया जा सके कि अब जवाब देने की ताकत उसके पास भी है। अप्रैल 2024 में इसकी पहली बैटरी डिलीवर की गई जिसमें कई लांचर, ट्रैकिंग सिस्टम और सपोर्ट व्हीकल शामिल होते हैं। और आपको बता दें ब्रह्मोस की ताकत ही इसे खास बनाती। करीब 2.8 मैक की रफ्तार यानी लगभग 3400 कि.मी. प्रति घंटा इतनी तेज की दुश्मन को संभलने का मौका तक नहीं मिलता। जमीन, समुद्र, हवा कहीं से भी लॉन्च होने की क्षमता ब्रह्मोस को और घातक बनाती है। 200 से 300 किलो तक का बोरहेड ले जाने वाली ये मिसाइल सीधे दुश्मन के ठिकानों को निशाना बना सकती है। फिलीपींस के लिए यह सिर्फ एक हथियार नहीं बल्कि एक डिटरेंसी यानी दुश्मन को पहले ही रोकने की ताकत। खासतौर पर समुद्री सुरक्षा, तटीय रक्षा और एंटी एक्सेस ऑपरेशन में यह गेम चेंजर मानी जा रही है। और फिलीपींस के पास जब से ब्रह्मोस आई थी। चीन की बौखलाहट भी देखने को मिली। 2024 में जब भारत ने फिलीपींस को ब्रह्मोस दी थी, उस वक्त भी चीन काफी बौखलाया था। और अब बेलीटन अभ्यास में पहली बार ब्रह्मोस का सिमुलेशन फायरिंग फिलीपींस करने जा रहा है। इसलिए चीन और बौखलाएगा। बड़ी बात यह है कि इसमें अमेरिका भी शामिल रहे और इस दौरान कई एडवांस सिस्टम भी शामिल किए जा रहे हैं। मकसद साफ है सभी सिस्टम को एक साथ जोड़कर ज्यादा ताकतवर सैन्य क्षमता तैयार करना। हालांकि आधिकारिक तौर पर कहा जा रहा है कि यह अभ्यास किसी एक देश के खिलाफ नहीं है। लेकिन जमीन की सच्चाई यही है कि पूरा फोकस इंडोपेसिफिक में बढ़ते तनाव पर है। जहां चीन की मौजूदगी लगातार चुनौती बन रही है। कुल मिलाकर ब्रह्मोस की एंट्री ने पूरे इलाके का रणनीतिक समीकरण बदल दिया है। भारत की यह मिसाइल अब सिर्फ देश की ताकत नहीं रही बल्कि चीन के खिलाफ खड़े देशों के लिए एक मजबूत ढाल बनती जा रही है।

दक्षिण कोरिया K9 तोप को बना रहा महाशक्तिशाली, चीन-पाकस्तिान को मिलेगी मात, 200 नए `वज्र' लेगा भारत

एजेंसी सोल

दक्षिण कोरिया अपनी बेहद लोकप्रिय तोप K9 थंडर को महाशक्तिशाली बनाने में जुट गया है। 155 एमएम की यह स्वचालित तोप दक्षिण कोरिया की कंपनी हनवहा एयरोस्पेस बनाती है। यह 8×8 व्हील्ड तोप युद्ध के बदलते स्वरूप को ध्यान में रखकर बनाई जा रही है। ऐसे समय पर जब दुश्मन के जवाबी तोप के हमले और ड्रोन अटैक बढ़ते जा रहे हैं, तब के9 तोप को और भी शक्तिशाली बनाने की तैयारी है। इससे दुश्मन के पलटवार पर यह तोप आसानी से अपना बचाव कर सकेगी। इस बदलाव के तहत के9 तोप की रेंज को 40 से बढ़ाकर 54 किमी तक करने की तैयारी है। इससे यह आसानी से लंबी दूरी तक वार करने में सक्षम हो जाएगी। भारत ने भी दक्षिण कोरिया से 200 के9 वज्र तोप को खरीदा है और ऐसे संकेत हैं कि 200 नए के9 वज्र तोप को खरीदा जा सकता है। इस अपग्रेड के बाद के-9 तोप की मदद से लंबी दूरी तक न केवल हमला किया जा सकेगा बल्कि लॉजिस्टिकल फुटप्रिंट को भी छिपाया जा सकेगा। दक्षिण कोरिया की कोशिश है कि वह दुनिया के तोप बाजार पर अपना कब्जा कर ले। नाटो देश भी अब लंबी दूरी तक हमला करने वाली तोपों पर फोकस कर रहे हैं और यही वजह है कि दक्षिण कोरिया भी इसकी रेंज को बढ़ाने पर काम कर रहा है। नाटो में शामिल कई देश जैसे पोलैंड और यूएई समेत पश्चिम एशिया के कई देश चाहते हैं कि उनकी पश्चिमी देशों के हथियारों पर से निर्भरता कम हो जाए। इसी वजह से वे दक्षिण कोरिया के हथियारों पर फोकस कर रहे हैं। हाल ही में यूएई में ईरानी मिसाइल और ड्रोन हमलों को रोकने में दक्षिण कोरिया के एयर डिफेंस सिस्टम बहुत कारगर साबित हुए थे। नए के9 तोप में दक्षिण कोरिया फायर कंट्रोल के लिए अत्याधुनिक सिस्टम लगा रहा है। इसके अलावा सटीक हमला करने के लिए नई तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे यह तोप अब बहुत कम समय में अत्यधकि तेजी से गोले दागने में सक्षम हो जाएगी। दक्षिण कोरियाई कंपनी हनवा का कहना है कि K9A3 SPH और K9A2 मॉडल में फुली ऑटोलोडर और संशोधित गन को लगाया गया है। रक्षा वेबसाइट Janes की रिपोर्ट के मुताबिक नई के 9 तोप में एक 58 कैलिबर की तोप और कंबाइंड ऑटोलोडर को लगाया गया है। इस तोप को चलाने के लिए केवल 3 लोगों कमांडर, गनर और ड्राइवर की जरूरत होगी। इसकी रेंज को अब 54 किमी तक कर दिया जाएगा और आटोलोडर एक बार में 40 राउंड गोले ले जा सकेगा। इसके अलावा 8 गोले उसकी मैगजीन में रहेंगे। इसमें एक लेजर बीम वार्निंग सिस्टम लगाया जाएगा। के 9 तोप में ड्रोन को जाम करने के लिए भी जैमर लगाया जाएगा ताकि वे हमला नहीं कर सकें दक्षिण कोरियाई कंपनी ने नए एक्टिव प्रोटेक्शन सिस्टम को भी मंजूरी दी है ताकि दुश्मन के किसी हमले से इसे बचाया जा सके यह तोप लद्दाख की भीषण ठंड से लेकर राजस्थान के तपते रेगिस्तान में काम करने में सक्षम है। भारत में इसे दक्षिण कोरिया के सहयोग से लार्सन एंड टूबो कंपनी बनाती है यह तोप मात्र 15 सेकंड में 3 गोले दागने में सक्षम है। एक गोला 47 किलोग्राम का होता है।
भारत और दक्षिण कोरिया समेत दुनिया के करीब 11 देश के 9 थंडर तोप का इस्तेमाल करते हैं।

ईरानी टैंकर ने अमेरिकी नाकाबंदी को दिया चकमा, चेतावनी को नजरअंदाज कर होर्मुज को किया पार

एजेंसी तेहरान

ईरान ने दावा किया है कि अमेरिकी नाकेबंदी और चेतावनियों को नजरअंदाज करते हुए उनका तेल टैंकर 'सिली सिटी' स्वदेश लौट आया है। विभिन्न स्थानीय मीडिया एजेंसियों ने इसकी जानकारी दी है। तस्नीम न्यूज एजेंसी ने बताया कि सोमवार देर रात नेवी के ऑपरेशनल सहयोग से तेल टैंकर सिली सिटी ईरान के क्षेत्रीय जलक्षेत्र में प्रवेश कर गया। टैंकर ट्रैकर्स डॉट कॉम में भी जहाज को इंडोनेशिया से ईरान के जलक्षेत्र में पहुंचते देखा जा सकता है। इसमें स्पष्ट दिखा कि तेल टैंकर ने, अमेरिकी नाकाबंदी के बावजूद, इंडोनेशिया के रियाउ द्वीपों तक दो मिलियन बैरल तेल की खेप पहुंचाने के बाद सफलतापूर्वक होर्मुज जलडमरूमध्य को पार किया। वहीं सरकारी न्यूज एजेंसी आईआरएनए (इस्लामिक रिपब्लिक न्यूज एजेंसी) ने भी इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान आर्मी के हवाले से इसकी जानकारी दी। सेना ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि अमेरिकी नौसेना बलों की बार-बार चेतावनियों और धमकियों के बावजूद, टैंकर ने सुरक्षित रूप से अरब सागर पार किया और रात भर में ईरानी जलक्षेत्र पहुंच गया। बयान में आगे कहा गया कि यह जहाज नौसेना की निगरानी में है, सुरक्षित है और अपनी यात्रा पूरी करने के बाद ईरान के दक्षिणी बंदरगाहों में से एक पर सुरक्षित रूप से लंगर डाले खड़ा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 12 अप्रैल को नौसैनिक नाकाबंदी का ऐलान कर दिया था। सीजफायर के महज चार दिन बाद ऐसा किया गया। इसे लेकर दोनों पक्ष के बीच तनाव काफी बढ़ा है।
इस बीच, सोमवार को, अमेरिकी सेना ने एक वाणिज्यिक ईरानी जहाज, 'टुस्का,' को कब्जे में लिया था, यह दावा करते हुए कि उसने नाकेबंदी का उल्लंघन किया था। दोनों ओर से बयानों की झड़ी लग गई। जिसके बाद इस्लामाबाद टॉक्स राउंड को लेकर भी संशय पैदा हो गया। ईरान के स्पीकर कह रहे हैं कि यूएस सीजफायर नियमों का उल्लंघन कर रहा है तो ट्रंप भी होर्मुज न खोलने देने की दशा में इसे लागू करते रहने का दावा कर रहे हैं।

भारत की ब्रह्मोस की बराबरी करने चला पाकिस्तान, तैमूर एयर लॉन्च्ड क्रूज मिसाइल का किया परीक्षण

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तानी नौसेना ने स्वदेशी रूप से विकसित एयर लॉन्च क्रूज मिसाइल का परीक्षण किया है। इसका नाम तैमूर एयर लॉन्च क्रूज मिसाइल है। पाकिस्तानी सेना के प्रॉपगैंडा विंग इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (ISPR) ने दावा किया है कि तैमूर क्रूज मिसाइल परीक्षण सफल रहा है। आईएसपीआर ने कहा कि पाकिस्तान नौसेना ने सटीक मारक क्षमता और ऑपरेशनल तत्परता के एक शक्तिशाली प्रदर्शन के रूप में तैमूर एयर-लॉन्च्ड क्रूज मिसाइल का सफल लाइव हथियार परीक्षण किया है। तैमूर स्वदेशी रूप से विकसित एंटी-शिप क्रूज वेपन सिस्टम है। इसे भारत के ब्रह्मोस मिसाइल की बराबरी करने के लिए विकसित किया गया है। ISPR ने कहा कि तैमूर क्रूज मिसाइल ने असाधारण सटीकता के साथ अपने मिशन को पूरा किया, जिससे लंबी दूरी पर दुश्मन के समुद्री खतरों का पता लगाने, उन्हें निशाना बनाने और निर्णायक रूप से बेअसर करने की पाकिस्तान नौसेना की युद्धक क्षमता की पुष्टि हुई। बयान में आगे कहा गया कि यह परीक्षण राष्ट्रीय रक्षा क्षमता में एक महत्वपूर्ण वृद्धि का प्रतीक है। उसने आगे कहा कि इस मिसाइल परीक्षण ने पारंपरिक क्षेत्र में पाकिस्तान के सशस्त्र बलों की बहु-आयामी समन्वित मारक स्थिति और क्षमताओं को मजबूत किया है। ISPR ने कहा कि पाकिस्तान नौसेना राष्ट्र के समुद्री हितों और संप्रभु जल की रक्षा करने की अपनी प्रतिबद्धता पर दृढ़ है। बयान के अंत में कहा गया, "पाकिस्तान के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, रक्षा बलों के प्रमुख और तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने पर वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को बधाई दी है।" पाकिस्तानी गृह मंत्री मोहसिन नकवी ने भी इस सफल परीक्षण की सराहना करते हुए कहा कि यह पाकिस्तान की रक्षा क्षमताओं के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है। तैमूर पाकिस्तान की एक अत्याधुनिक हवा से मार करने वाली क्रूज मिसाइल है। यह मिसाइल पाकिस्तान की राद (Ra'ad) मिसाइल सीरीज का एक उन्नत और पारंपरिक वेरिएंट मानी जाती है। तैमूर मिसाइल की रेंज 600 किलोमीटर है, जो इसे "स्टैंड-ऑफ" हथियार बनाती है। इसका मतलब, पाकिस्तानी वायुसेना के विमान दुश्मन की एयर डिफेंस रेंज में घुसे बिना दूर से ही इस मिसाइल से निशाना साध सकते हैं। यह मिसाइल जमीन के बहुत करीब उड़ान भर सकती है, जिससे दुश्मन के रडार और मिसाइल डिफेंस सिस्टम के लिए इसका पता लगाना मुश्किल हो सकता है। पाकिस्तान की तैमूर एक सबसोनिक क्रूज मिसाइल है। इसका मतलब तैमूर क्रूज मिसाइल की गति लगभग 0.8 मैक (ध्वनि की गति से कम) है। यह लगभग 400-450 किलोग्राम का वारहेड ले जाने में सक्षम है। पाकिस्तान ने इसे दुश्मन के बंकरों, कमांड सेंटरों और युद्धपोतों को नष्ट करने के लिए डिजाइन किया है। पाकिस्तान का दावा है कि तैमूर क्रूज मिसाइल में इसमें उन्नत नेविगेशन और गाइडेंस सिस्टम लगा है, जो इसे पिन-पॉइंट सटीकता के साथ हमला करने योग्य बनाता है। यह भी दावा है कि तैमूर एक स्टील्थ मिसाइल है, जिसके ढांचे को दुश्मन की रडार की पकड़ से बाहर रखने के लिए डिजाइन किया गया है। भारत की ब्रह्मोस एक दुनिया की सबसे तेज और घातक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है। यह मैक 2.8 से 3.0 की गति से उड़ान भरती है। ब्रह्मोस मिसाइल की रेंज 290 किमी से लेकर 800 किमी के बीच है। यह मिसाइल जमीन, जल, या हवा से दुश्मन के ठिकानों को तबाह कर सकती है।
ब्रह्मोस मिसाइल 'फायर एंड फॉरगेट' सिद्धांत पर काम करती है। मतलब, एक बार लक्ष्य को लॉक करने के बाद मिसाइल को गाइड करने की आवश्यकता नहीं होती है।

सनराइजर्स हैदराबाद ने दिल्ली कैपिटल्स को रौंदा, अभिषेक शर्मा और ईशान मलिंगा का चला जादू

एजेंसी नई दिल्ली

अभिषेक शर्मा के तूफान और ईशान मलिंगा की बेहतरीन गेंदबाजी के दम पर एसआरएच ने 47 रनों से जीत लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए हैदराबाद ने 20 ओवरों में दो विकेटखोकर 242 रन बनाए। जिसके बाद दिल्ली 20 ओवर में महज 195 रन ही बना पाई।

हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में सनराइजर्स हैदराबाद और दिल्ली कैपिटल्स के बीच मुकाबला खेला गया। जिसे अभिषेक शर्मा के तूफान और ईशान मलिंगा की बेहतरीन गेंदबाजी के दम पर एसआरएच ने 47 रनों से जीत लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए हैदराबाद ने 20 ओवरों में दो विकेटखोकर 242 रन बनाए। जिसके बाद दिल्ली 20 ओवर में महज 195 रन ही बना पाई।

अभिषेक ने अपने आईपीएल करियर का कुल दूसरा और टी20 करियर का 9वां शतक ठोका। उन्होंने 68 गेंदों पर 10 चौके और 10 छक्कों की मदद से नाबाद 135 रनों की पारी खेली। आखिर में हेनरिक क्लासेन ने 13 गेंदों पर तीन चौके और तीन छक्कों की मदद से नाबाद 37 रन बनाए। मलिंगा ने चार ओवरों में 32 रन देकर चार विकेट झटके। इ जीत ने हैदराबाद को तीसरे स्थान पर पहुंचा दिया है। उसके सात मैचों में चार जीत और तीन हार के बाद आठ अंक हो गए हैं। वहीं लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स की शुरुआत कुछ खास नहीं रही। तीसरे ओर की पहली ही गेंद पर दिलशान मदुशंका ने पाथुम निसंका को आउट कर दिया। वह 6 गेंदों पर आठ रन ही बना पाए। राहुल ने फिर नीतीश राणा के साथ मिलकर टीम को खराब शुरुआत से उबारा। पावरप्ले में दिल्ली ने एक विकेट खोकर 59 रन बनाए। हालांकि, जिस रन रेट की जरूरत दिल्ली को थी उससे रन बन नहीं रहे थे। वहीं इसके बाद साकिब हसन की एक क्रॉस सीम गेंद पर राहुल, अभिषेक को कैच दे बैठे। राहुल ने 23 गेंदों पर तीन छक्के और एक चौके की मदद से 37 रनों की पारी खेली। राहुल जब आउट हुए तब दिल्ली का विकेट 107 रन था। वहीं क्रीज पर पैर जमा बैठे नीतिश राणा की पारी का अंत ईशान मलिंगा ने किया। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने 30 गेंदों पर 57 रन बनाए जिसमें सात चौके और तीन छक्के शामिल रहे। ये विकेट 11वें ओवर की पहली गेंद पर गिरा। मलिंगा ने अगली गेंद पर डेविड मिलर जैसे तूफानी बल्लेबाज को पहली ही गेंद पर बोल्ड कर दिया। वह बिना खाता खोले लौटे।

रनों के लिहाज से मुंबई इंडियंस की आईपीएल में 5 सबसे बड़ी जीत, इन टीमों को किया शर्मसार

एजेंसी नई दिल्ली

आईपीएल 2026 के 30वें मुकाबले में मुंबई इंडियंस ने गुजरात टाइटंस को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में 99 रन के बड़े अंतर से हराया था। ऐसे में हम आपको बताने जा रहे हैं आईपीएल के इतिहास में मुंबई इंडियंस की रनों के लिहाज से 5 सबसे बड़ी जीत के बारे में। आईपीएल 2017 में मुंबई इंडियंस ने दिल्ली कैपिटल्स को 147 रन के मार्जिन से हराया था। यह मैच दिल्ली में खेला गया था। बता दें कि एमआई की आईपीएल में रनों के लिहाज से यह सबसे बड़ी जीत है। कोलकाता नाइटराइडर्स के खिलाफ मुंबई इंडियंस ने 2018 के आईपीएल में 102 रन की बड़ी जीत हासिल की थी। यह मैच कोलकाता में खेला गया था। आईपीएल 2025 में जयपुर में मुंबई इंडियंस ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ 100 रन की जीत दर्ज की थी। गुजरात टाइटंस के खिलाफ मौजूदा आईपीएल सीजन (2026) में मुंबई इंडियंस ने अहमदाबाद में 99 रन की जीत हासिल की थी। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ दिल्ली में ही मुंबई इंडियंस ने 2010 के आईपीएल में 98 रन की जीत हासिल की थी।

अभिषेक शर्मा का धांसू शतक, पर तिलक वर्मा से दो गेंदे ज्यादा खेली, केएल राहुल की एक गलती पड़ी भारी

एजेंसी हैदराबाद

आईपीएल 2026 में अभिषेक शर्मा का कोहराम एक बार फिर से शुरू हो चुका है। अबतक इस सीजन में दो हाफ सेंचुरी लगाने वाले अभिषेक ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आज शतक ठोक दिया है। अभिषेक ने सिर्फ 47 गेंदों पर 7 चौके और 9 छक्कों की मदद से अपना शतक पूरा किया। यह आईपीएल इतिहास में उनकी दूसरी सेंचुरी है। इसी के साथ वे ऑरेंज कैप की रेस में भी अब टॉप पर पहुंच चुके हैं।

अभिषेक शर्मा ने अपने आईपीएल करियर का दूसरा शतक दो गेंदों पर लगातार दो छक्के लगाकर पूरा किया। इसी के साथ वे इस सीजन 300 रन से ज्यादा बनाने वाले पहले बल्लेबाज भी बन चुके हैं। वहीं एक बड़े रिकॉर्ड के मामले में उन्होंने विराट कोहली की बराबरी कर ली है। टी20 में सबसे ज्यादा शतकों के मामले में विराट और अभिषेक अब बराबरी पर हैं, जिनके नाम 9-9 शतक हैं।

टी20 क्रिकेट में सबसे अधिक शतक

22 क्रिस गेल
12 बाबर आजम
10 डेविड वार्नर
9 क्विंटन डी कॉक/ विराट कोहली/ रिले रोसौव/ साहिबजादा फरहान/ अभिषेक शर्मा

तिलक वर्मा ने भी एक दिन पहले मारा था शतक

इससे पहले तिलक वर्मा ने भी एक दिन पहले आईपीएल में अपना पहला शतक ठोका था। तिलक ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ 45 गेंदों पर अपनी पहली आईपीएल सेंचुरी ठोकी थी। देखा जाए तो अभिषेक ने तिलक से सिर्फ 2 गेंद ज्यादा खेलकर ये सेंचुरी ठोकी है।

50 रन बनाते ही एमएस धोनी का बड़ा रिकॉर्ड

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज केएल राहुल पिछले साल आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स के साथ जुड़ गए थे। आईपीएल 2025 में भी उन्होंने रनों का अंबार लगाया था। वहीं अब इस साल भी अच्छी फॉर्म में चल रहे हैं। वहीं केएल राहुल इस सीजन भारतीय दिग्गज एमएस धोनी का एक बड़ा आईपीएल रिकॉर्ड तोड़ सकते हैं। वह उनसे एक खास मामले में आगे निकल सकते हैं।

धोनी का बड़ा रिकॉर्ड तोड़ने से 50 रन दूर केएल राहुल

34 साल के केएल राहुल इंडियन प्रीमियर लीग में सिर्फ 50 रन और बनाकर एमएस धोनी का रिकॉर्ड तोड़ देंगे वह आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले छठे खिलाड़ी बन जाएंगे। मौजूदा समय में एमएस धोनी 278 मैचों में 5439 रन के साथ छठे स्थान पर हैं और केएल राहुल ठीक उनके नीचे 150 मैचों में 5390 रन के साथ हैं। बता दें कि एमएस धोनी अब तक इस सीजन में चोटिल होने की वजह से एक भी मुकाबला नहीं खेले हैं। अगर वह फिट हो जाते हैं और इस सीजन कुछ मैचों में उनको बैटिंग करने का मौका मिलता है तो उनके रनों में इजाफा हो जाएगा। ऐसे में सीजन खत्म होने के बाद यह देखना दिलचस्प होगा कि दोनों में से कौन आगे है। राहुल के पास सुरेश रैना से भी आगे निकलने का मौका भारतीय टीम के पूर्व ऑलराउंडर सुरेश रैना आईपीएल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट में पांचवें स्थान पर हैं। उनके 205 मैचों में 5528 रन हैं। वह इस वक्त केएल राहुल से 138 रन ही आगे हैं। जिस तरह का राहुल का फॉर्म चल रहा है वह इसी सीजन सुरेश रैना को भी ओवरटेक कर सकते हैं। केएल राहुल ने इंडियन प्रीमियर लीग 2026 में अब तक 5 मैचों में 2 फिफ्टी के चलते 168 रन बनाए हैं। उनका स्ट्राइक रेट 168 का रहा है।

व्यापार

8 से 11, रूसी तेल के लिए भारत के इस कदम के मायने समझ लीजिए

एजेंसी नई दिल्ली

समंदर में जोखिम बढ़ा है। इसने इंश्योरेंस कॉस्ट बढ़ा दी है। फारस की खाड़ी के व्यापार मार्गों के आसपास तो हालात और बिगड़े हैं। वहां ग्लोबल समुद्री बीमा और पुनर्बीमा कंपनियों ने कवरेज देने से हाथ खींच लिए हैं। इस बीच भारत ने रूसी तेल खरीद के लिए एक अहम कदम उठाया है। उसने रूसी बीमा कंपनियों के एक पूल का विस्तार किया है। यह समूह उन कंपनियों का है जिन्हें बंदरगाहों पर आने वाले जहाजों के लिए समुद्री बीमा कवरेज (मरीन इंश्योरेंस कवरेज) देने की अनुमति मिली है। भारत का यह कदम पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक उठापटक के बीच ट्रेड फ्लो को समर्थन देने के मकसद से उठाया गया है। डायरेक्टरेट जनरल ऑफ शिपिंग ने इस बारे में जानकारी दी है। इसके अनुसार, उसने अप्रूव्ड रूसी इंश्योरेंस कंपनियों की संख्या 8 से बढ़ाकर 11 कर दी है। इससे अधिक संस्थाओं को 'प्रोटेक्शन एंड इंडेम्निटी' (P&I) कवर देने की अनुमति मिल गई है। यह ग्लोबल मैरीटाइम ऑपरेशन के लिए बेहद जरूरी है। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब रूस पर पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण पारंपरिक यूरोपीय बीमा प्रदाताओं तक पहुंच सीमित हो गई है। इससे भारत जैसे देशों को वैकल्पिक व्यवस्थाओं पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

भारत के लिए इस कदम के मायने भारत का यह कदम उसकी एनर्जी सिक्योरिटी स्ट्रैटेजी से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़े तेल (क्रूड ऑयल) आयातक देश है। पश्चिमी प्रतिबंधों की शुरुआत के बाद से ही वह रियायती दरों पर मिलने वाले रूसी कच्चे तेल पर अपनी निर्भरता बढ़ाता जा रहा है। तेल परिवहन में इंश्योरेंस को बेहद महत्वपूर्ण कम्पोनेंट माना जाता है। कारण है कि तेल के रिसाव, दुर्घटनाओं और पर्यावरणीय दायित्वों से जुड़े जोखिम बहुत अधिक होते हैं। चूंकि कई वैश्विक बीमा कंपनियां रूसी कार्गो का बीमा करने से पीछे हट गई हैं। ऐसे में अप्रूव्ड बीमा कंपनियों की लिस्ट का विस्तार करने से सप्लाई की निरंतरता सुनिश्चित करने में मदद मिलती है। इसके व्यापक संदर्भ में बढ़ती हुई भू-राजनीतिक तनाव की स्थिति भी शामिल है। खासतौर से मिडिल ईस्ट में। इसने होर्मुज स्ट्रेट जैसे प्रमुख शिपिंग मार्गों को बाधित कर दिया है। इन रुकावटों और प्रतिबंधों से पैदा हुई बाधाओं के कारण देशों के लिए समुद्री व्यापार को बनाए रखने के लिए समानांतर प्रणालियां विकसित करना जरूरी हो गया है। रूसी और वैकल्पिक बीमाकर्ताओं तक पहुंच का विस्तार करके भारत प्रभावी रूप से अपने आयात चैनलों को बाहरी झटकों से सुरक्षित रख रहा है। साथ ही ऊर्जा की निरंतर सप्लाई भी सुनिश्चित करने में जुटा है। रूसी बीमा कंपनियां मुख्य रूप से 'इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ P&I क्लब्स' से बाहर हैं। यह समूह दुनिया के ज्यादातर टैंकर बेड़े को कवर करता है। इस कमी को पूरा करने के लिए वे आगे आई हैं। विशेष रूप से उन जहाजों के लिए जो रूसी कच्चे तेल का परिवहन करते हैं। पिक्चर में आईं ये रूसी बीमा कंपनियां एक्सपैंडेड अप्रूवल्स के तहत गैजप्रॉम इंश्योरेंस (Gazprom Insurance) और रोसगोसत्रख इंश्योरेंस जैसी प्रमुख रूसी कंपनियों को फरवरी 2027 तक समुद्री बीमा कवरेज देने के लिए अधिकृत किया गया है। जबकि बैलेंस इंश्योरेंस को अगस्त 2026 तक की मंजूरी मिली है। अन्य बीमा कंपनियों के पंजीकरण की अवधि फरवरी 2027 तक बढ़ा दी गई है।

दूध की सप्लाई पर सरकार का अपडेट, पश्चिम एशिया संकट के बीच एलपीजी-पीएनजी का भी बताया हाल

एजेंसी नई दिल्ली

पश्चिम एशिया संघर्ष जारी संघर्ष के बावजूद देशभर में दूध और दूध के उत्पादों की कीमतें स्थिर बनी हुई हैं। सप्लाई में कोई बाधा नहीं आई है। सरकार ने मंगलवार को यह अपडेट दिया। उसने यह भी बताया कि घरों में एलपीजी सप्लाई को प्राथमिकता दी गई है। एलपीजी डिस्ट्रीब्यूटरशिप्स पर स्टॉक खत्म होने की कोई रिपोर्ट नहीं है। मार्च 2026 से अब तक 5.01 लाख से ज्यादा पीएनजी कनेक्शन चालू किए गए हैं। वहीं, 5.68 लाख से ज्यादा ग्राहकों ने नए कनेक्शन के लिए रजिस्ट्रेशन कराया है। सरकारी तेल कंपनियों ने अचानक निरीक्षण जारी रखे हैं। 28 फरवरी 2026 से अब तक 9 एलपीजी जहाज और 1 क्रूड ऑयल का जहाज होर्मुज स्ट्रेट से सुरक्षित रूप से गुजरे हैं। इराक में फंसे 12 भारतीय नाविक बीते रोज बगदाद में भारतीय मिशन की मदद से मुंबई पहुंचे। पशुपालन और डेयरी विभाग में निदेशक पूजा रुस्तगी पश्चिम एशिया के हाल के घटनाक्रम पर अंतर-मंत्रालयी बैठक में मौजूद रहीं। उन्होंने बताया कि डेयरी सेक्टर को ईंधन, गैस और प्लास्टिक पैकेजिंग सामग्री की सप्लाई से संबंधित कोई समस्या नहीं है। उन्होंने कहा कि जहां संभव हो, डेयरी इंडस्ट्री को एलपीजी के स्थान पर पाइप से मुहैया कराई जाने वाली प्राकृतिक गैस (पीएनजी) का इस्तेमाल करने की सलाह दी गई है। रुस्तगी ने कहा, 'मौजूदा पश्चिम एशिया संकट के बीच भी देशभर में दूध की खरीद, प्रोसेसिंग और सप्लाई बिना किसी बाधा के बनी हुई है। दूध और दूध के उत्पादों के दाम स्थिर हैं। बाजार में किसी तरह की सप्लाई बाधित नहीं हुई है। संकट की अवधि के दौरान डेयरी किसानों को पेमेंट भी जारी रहा है।' भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। साल 2024-25 के दौरान देश का कुल दूध उत्पादन 24.787 करोड़ टन रहा। निदेशक ने बताया कि सोमवार को देशभर के राज्य दुग्ध महासंघों और दुग्ध संघों के साथ बैठक और दूध की स्थिति की समीक्षा की गई। साथ ही डेयरी सेक्टर पर पश्चिम एशिया संकट के असर पर विचार किया गया। उन्होंने कहा, 'डेयरी सेक्टर को ईंधन, गैस और प्लास्टिक पैकेजिंग सामग्री की सप्लाई से जुड़ी कोई समस्या नहीं है।' निदेशक ने बताया कि पशुपालन और डेयरी विभाग स्थिति पर करीबी नजर रखे हुए है। डेयरी वैल्यू चेन में सुचारु संचालन सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए हैं। विभाग बदलती स्थिति का आकलन करने के लिए नियमित रूप से संबंधित पक्षों के साथ बैठकें कर रहा है।पैकेजगि मटीरयिल की कोई दक्कित नहीं ईंधन उपलब्धता पर रुस्तगी ने कहा कि पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के आठ अप्रैल 2026 के आदेश से यह सुनिश्चित किया गया है कि डेयरी प्रोसेसिंग प्लांटों सहित महत्वपूर्ण उद्योगों को मार्च 2026 से पहले की गैर-घरेलू एलपीजी सप्लाई का 70 फीसदी हासिल होगा।

100% इथेनॉल ब्लेंडिंग, ईरान युद्ध के बीच सरकार ने सेट किया बड़ा टारगेट, इसका मतलब

एजेंसी नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में जारी संकट के बीच सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने एक अहम टारगेट की बात की है। उन्होंने मंगलवार को कहा कि ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता को मजबूत करने की जरूरत है। इसके लिए भारत को आने वाले समय में 100 फीसदी इथेनॉल ब्लेंडिंग का लक्ष्य रखना चाहिए। उनके मुताबिक, मिडिल ईस्ट संकट के चलते तेल सप्लाई में आई कमजोरी ने देश के लिए आयात पर निर्भरता कम करना जरूरी बना दिया है। इंडियन फेडरेशन ऑफ ग्रीन एनर्जी के ग्रीन ट्रांसपोर्ट कॉन्क्लेव में गडकरी ने कहा, 'आने वाले समय में भारत को 100% इथेनॉल ब्लेंडिंग का लक्ष्य रखना चाहिए... आज पश्चिम एशिया में युद्ध के कारण हम ऊर्जा संकट का सामना कर रहे हैं। इसलिए हमारे लिए ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना जरूरी है।' भारत अभी गाड़ियों को E20 पेट्रोल पर चलाने की इजाजत देता है। इसमें 20 फीसदी इथेनॉल (20% इथेनॉल + 80% पेट्रोल) होता है। जंग लगने और उससे जुड़ी समस्याओं से बचने के लिए इंजन में थोड़े-बहुत बदलाव करने पड़ते हैं। 2023 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 20 फीसदी इथेनॉल मिला हुआ पेट्रोल लॉन्च किया था। ब्राजील जैसे देश पहले ही 100 फीसदी इथेनॉल ब्लेंडिंग का लक्ष्य हासिल कर चुके हैं। हम 22 लाख करोड़ रुपये का जीवाश्म ईंधन आयात करते हैं। इससे प्रदूषण भी होता है... इसलिए हमें वैकल्पिक ईंधन और बायो-फ्यूल के उत्पादन को बढ़ाने पर काम करने की जरूरत है। 100% ब्लेंडिंग का मतलब क्या है? तकनीकी रूप से '100% ब्लेंडिंग' का मतलब है E100 फ्यूल। इसका मतलब यह है कि वाहन पूरी तरह से इथेनॉल पर चलेगा, जिसमें पेट्रोल की मात्रा मामूली होगी। सरकार का मकसद ऐसे 'फ्लेक्स फ्यूल इंजन' को बढ़ावा देना है जो 20% से लेकर 100% तक किसी भी अनुपात में इथेनॉल पर चल सकें। अगर वाहन 100% इथेनॉल पर चलता है तो उसके लिए पेट्रोल की जरूरत बहुत कम या न के बराबर होगी।

मथुरा-वृंदावन से द्वारका तक, कान्हा के इन 9 धामों में बसती है दिव्यता

महाभारत और पुराणों में भगवान श्रीकृष्ण का जीवनकाल 125 साल का बताया गया है। लेकिन अपने जीवनकाल में शायद ही श्रीकृष्ण लंबे समय तक एक स्थान पर रहे हों। भगवान श्रीकृष्ण का जीवन अलग-अलग चरणों में बीता। खतरे के माहौल को देखते हुए बचपन छिपकर बिताया। यौवन काल प्रेम और विरह से भरा, वयस्क जीवन जिम्मेदारियों से भरा और आखिर में वैराग्य और एकांत से जुड़ी यादें। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको जन्म से लेकर वैराग्य तक भगवान श्रीकृष्ण के 9 पवित्र धाम के बारे में बताने जा रहे हैं। जहां पर आज भी दिव्यता गूंजती है।

मथुरा भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ था। यहां पर भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मंदिर और विश्राम घाट है। उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में श्रीकृष्ण जन्मभूमि है।

गोकुल जन्म के बाद श्रीकृष्ण का पालन-पोषण नंद बाबा के घर गोकुल में ही हुआ था। यहां के मुख्य स्थल नंद भवन और रमणरेती है। आज भी यहां की गलियां बाल कृष्ण की लीलाओं की गवाही देती है। यहां पर आज भी मां यशोदा की लोरियां और घर-घर में श्रीकृष्ण के माखन चुराने की कथाएं प्रचलित हैं।

वृंदावन श्रीराधा-कृष्ण की रासलीलाओं का पावन स्थल है। वृंदावन के प्रमुख मंदिर प्रेम मंदिर और बांके बिहारी मंदिर है। यहां का हर कोना प्रेम और भक्ति से सराबोर रहता है। यहां पर रात के समय राधा रानी और गोपियों की मौजूदगी को महसूस किया जा सकता है।

नंदगांव भगवान श्रीकृष्ण के किशोर काल से जुड़ा है। यहां का मुख्य आकर्षण नंद राय मंदिर है।

बरसाना यह गांव राधा जी का गांव माना जाता है। यहां पर लाडली जी का मंदिर है। वहीं बरसाना की लठमार होली विश्व प्रसिद्ध है।

उज्जैन उज्जैन में श्रीकृष्ण ने गुरु संदीपनि के आश्रम में शिक्षा ली थी। यहां पर आज भी संदीपनि ऋषि का आज भी दर्शनीय है। यहां पर श्रीकृष्ण की सुदामा से मित्रता हुई थी।

द्वारका मथुरा छोड़कर भगवान श्रीकृष्ण ने द्वारका को अपनी राजधानी बनाया था। यहां का मुख्य आकर्षण द्वारकाधीश मंदिर है। द्वारकाधीश मंदिर चार धामों में से एक प्रमुख धाम है।

कुरुक्षेत्र महाभारत युद्ध के दौरान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था। यहां का विशेष स्थल ज्योतिसर है। यह स्थान कर्म और धर्म का प्रतीक है।

सोमनाथ माना जाता है कि श्रीकृष्ण ने यहीं प्रभास क्षेत्र में देह त्याग किया था।

सोमनाथ मंदिर के पास स्थित यह स्थान अत्यंत पवित्र माना जाता है।

सिर्फ एक गेंदे का फूल करेगा कमाल, विष्णु-लक्ष्मी और गणेश जी की बरसेगी अपार कृपा

हिंदू धर्म में गेंदे का फूल अति पावन और शुभ माना जाता है। गेंदे के फूल की सुनहरी-पीली और नारंगी चमक को शुभता, ऊर्जा और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि यह फूल कई देवी-देवताओं को अत्यंत प्रिय होता है। जब भक्त भावपूर्वक उन्हें गेंदे के फूल या उसकी माला अर्पित करते हैं, तो उनकी कृपा शीघ्र प्राप्त होती है। ऐसे घरों में शुभ कार्य बिना किसी रुकावट के सफलतापूर्वक पूरे होते हैं और सुख-समृद्धि का वास होता है। साथ ही, मांगलिक कार्यों में तेजी आती है और मनोकामनाएं भी पूरी होने लगती हैं।

किन देवी देवताओं को प्रिय है गेंदे का फूल गेंदे का फूल पीले रंग का है और पीला रंग बृहस्पति ग्रह से जुड़ा है। गेंदे का फूल केवल पीले ही नहीं, बल्कि केसरिया रंग में भी पाया जाता है, जो त्याग, ऊर्जा और तेज का प्रतीक माना जाता है। आमतौर पर जिन देवी-देवताओं को पीला रंग प्रिय होता है, उन्हें गेंदे के फूल अर्पित किए जा सकते हैं। लेकिन विशेष रूप से तीन देवता ऐसे हैं जिन्हें यह फूल अत्यंत प्रिय माना गया है। पूजा-अर्चना में गेंदे के फूल का प्रयोग तो सामान्य है, परंतु जब इसे भगवान गणेश, माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु को समर्पित किया जाता है, तो उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है। मान्यता है कि इन देवी-देवताओं को गेंदे का फूल चढ़ाने से जीवन में सुख-समृद्धि और शुभ फल की प्राप्ति होती है।

माता लक्ष्मी को प्रिय हैं गेंदे का फूल देवी लक्ष्मी को गेंदे का फूल पसंद है। जब माता लक्ष्मी को गेंदे का फूल चढ़ाते हैं तो उनके जीवन में सकारात्मकता आती है और धन कमाने के रास्ते भी खुल जाते हैं। हर शुक्रवार को ताजे गेंदे के फूल को लक्ष्मी जी को अर्पित करें और ऐसा करने से घर की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

विष्णु जी को प्रिय है गेंदे का फूल भगवान विष्णु को विशेष रूप से पीले रंग के गेंदे के फूल बेहद प्रिय माने जाते हैं। यदि गुरुवार के दिन विधि-विधान से उनकी पूजा कर उन्हें गेंदे के फूल या उसकी माला अर्पित की जाए, तो भक्तों को संतान सुख, बुद्धि और समृद्धि का आशीर्वाद मिल सकता है। ऐसा करने से जीवन में स्थिरता आती है और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है, जिससे मन और वातावरण दोनों प्रसन्न रहते हैं।

गणेश जी को प्रिय है गेंदे का फूल भगवान गणेश को गेंदे के फूल अत्यंत प्रिय माने जाते हैं। बुधवार के दिन विधिपूर्वक उनकी पूजा करके यदि उन्हें गेंदे के फूल अर्पित किए जाएं, तो वे शीघ्र प्रसन्न होते हैं। इससे जीवन में सुख-समृद्धि का आगमन होता है, बुद्धि और विवेक की प्राप्ति होती है तथा कार्यों में आने वाली बाधाएं दूर होने लगती हैं। मान्यता है कि गणेश जी को गेंदे का फूल चढ़ाना आर्थिक परेशानियों को कम करने का सरल और प्रभावी उपाय माना जाता है।

आज खुलेंगे केदारनाथ धाम के कपाट, जानें केदारनाथ धाम के 5 रहस्य

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ धाम भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। भगवान शिव के इस धाम को पंच केदार में से सर्वोच्च माना जाता है। पांडवों द्वारा निर्मित केदारनाथ धाम में महादेव कूबड़ के आकार में विराजमान हैं। यहां स्वयंभू शिवलिंग की पूजा होती है। भगवान शिव का यह धम कई रहस्यों को अपने अंदर संजोए हुए हैं। भक्तों के लिए केदारनाथ की यात्रा केवल एक तीर्थयात्रा नहीं, बल्कि खुद को शिव की ऊर्जा में विलीन करने का एक अलौकिक अनुभव है। आइए जानते हैं केदारनाथ धाम के 10 अनसुने रहस्य।

बैल रूप धारण कर धरती में समा गए शिव

केदारनाथ धाम का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ बताया जाता है। महाभारत के युद्ध के बाद पांडव भगवान शिव को खोजते हुए केदार घाटी पहुंचे। भगवान शिव उन्हें दर्शन नहीं देना चाहते थे इसलिए यहां बैल का रूप धारण कि छिपे हुए थे। लेकिन भीम ने उन्हें पहचान लिया और उनकी पीठ को पकड़ लिया। जिसके बाद भगवान शिव धरती में समा गए और उनका पीठ का हिस्सा ऊपर ही रह गाया। तब से शिवलिंग से रूप में इसकी पूजा होती है।

पंच केदार का रहस्य पौराणिक मान्यता है कि जब भगवान शंकर बैल के रूप में अंतर्ध्यान हुए तो उनके धड़ से ऊपर का भाग काठमांडू, नेपाल में प्रकट हुआ। नेपाल में वहां पशुपतिनाथ मंदिर स्थित है। इसके अलावा भुजाएं तुंगनाथ में, मुख रुद्रनाथ में, नाभि मद्महेश्वर में और जटा कल्पेश्वर में प्रकट हुईं। इसलिए केदारनाथ सहित इन चारों स्थानों को पंच केदार कहा जाता है।

केदारनाथ धाम में स्वयंभू शिवलिंग

केदारनाथ धाम को स्वयंभू कहा जाता है यानी अपने आप प्रकट हुआ शिवलिंग। शिवपुराण के अनुसार, केदारनाथ मंदिर का निर्माण पांडवों के पौत्र महाराज जनमेजय ने कराया था और आदिशंकराचार्य ने इसका जीर्णोद्धार कराया था। भगवान शिव के अन्य शिवलिंग के विपरीत केदारनाथ धाम का शिवलिंग गोल नहीं, बल्कि एक त्रिकोणीय चट्टान की तरह है। जिसे पीठ के आकार का बताया जाता है।

भू वैज्ञानिकों के अनुसार, केदारनाथ मंदिर लगभग 400 सालों तक बर्फ में दबा रहने के बाद भी पहले की तरह ही सुरक्षित था। 13वीं से 17वीं शताब्दी छोटा हिमयुग आया था, जिसमें यह मंदिर बर्फ और ग्लेशियर के नीचे दब गया था। इसके बाद भी शिव के इस मंदिर की संरचना को नुकसान नहीं पहुंचा। वैज्ञानिकों के अनुसार मंदिर की दीवारों पर आज भी ग्लेशियर में दबे होने से साक्ष्य मौजूद हैं। कत्यूरी शैली से बने इस मंदिर में विशाल पत्थरों का उपयोग किया गया है।

लुप्त हो जाएगा केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु के अवतार नर और नारायण ऋषि तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और ज्योतिर्लिंग के रूप में यहां वास कर गए। केदारनाथ धाम के पीछे दो पर्वत श्रृंखलाएं हैं, जिन्हें नर और नारायण पर्वत कहा जाता है। माना जाता है कि जिस दिन नर और नारायण पर्वत आपस में मिल जाएंगे उस दिन बद्रीनाथ धाम और केदारेश्वर धाम लुप्त हो जाएंगे। इसके बाद भविष्य में भविष्य बद्री नाम से नए तीर्थ का उद्गम होगा।

आर्थिक राशिफल: मिथुन और तुला के उन्नति के नए रास्ते खुलेंगे, मेष से मीन तक पढ़िए कैसा रहेगा करियर और आर्थिक हाल

मेष राशि शुक्रदेव के अपनी राशि में होने से आपका फाइनेंशियल सेक्टर अच्छी तरह से सुरक्षित है। अपनी सेविंग्स को रिव्यू करने या टिकाऊ चीजों में इन्वेस्ट करने के लिए यह अच्छा दिन है। हालांकि, बुधदेव के कमजोर होने पर, किसी भी ट्रांजैक्शन की डिटेल्स पर कड़ी नजर रखें। आज सट्टेबाजी के रिस्क या हाई-स्टेक डील से बचें, इसके बजाय अपने मौजूदा रिसोर्स को बनाए रखने और बिना सोचे-समझे खर्च करने से बचें।

वृषभ राशि मिथुन राशि में चंद्रदेव और बृहस्पति की वजह से आपकी फाइनेंशियल समझ तेज है। आप अपनी सेविंग्स में बढ़ोतरी देख सकते हैं या बजटिंग की किसी समस्या का कोई स्मार्ट सॉल्यूशन ढूंढ सकते हैं। इसके बावजूद, आज बड़े फाइनेंशियल कमिटमेंट या बोलकर किए गए एग्रीमेंट करने से बचें। बुधदेव की कमजोरी बताती है कि धोखा मिल सकता है। इसलिए अपनी स्ट्रेटेजी प्राइवेट रखें और साइन करने से पहले ज्यादा क्लैरिटी का इंतजार करें।

मिथुन राशि आज आपका फाइनेंशियल नजरिया आपके सोशल कनेक्शन से प्रभावित होगा। आपके ग्यारहवें घर में सूर्यदेव की वजह से दोस्तों या प्रोफेशनल ग्रुप्स से फायदा हो सकता है। मगर, बुधदेव के कमजोर होने की वजह से यह दिन स्पेक्युलेटिव ट्रेडिंग या ज्यादा रिस्क वाले इन्वेस्टमेंट के लिए नहीं है। उन प्लान पर टिके रहें, जिन्हें आपने पहले ही देख लिया है। सिर्फ अपने दिल की आवाज के आधार पर बड़ी खरीदारी करने से बचें, क्योंकि अभी लॉजिक थोड़ा अस्पष्ट हो सकता है।

कर्क राशि आपकी फाइनेंशियल सिचुएशन स्थिर बनी हुई है, जिसका मुख्य कारण वृषभ राशि में शुक्रदेव का स्थिर करने वाला असर है। आपको लॉन्ग-टर्म इन्वेस्टमेंट के बारे में किसी दोस्त या प्रोफेशनल नेटवर्क से मददगार सलाह मिल सकती है। हालांकि, चंद्रदेव आपके नुकसान के घर में है और बुधदेव कमजोर हैं, इसलिए आज बिना सोचे-समझे दान करने या बड़ी आध्यात्मिक खरीदारी करने से बचें। स्पेक्युलेटिव फायदों के पीछे भागने के बजाय, जो आपके पास है उसे मैनेज करने पर ध्यान दें।

सिंह राशि फाइनेंस के लिए यह मिला-जुला दिन है। बृहस्पतिदेव आपकी इनकम में बढ़ोतरी या किसी लंबे समय के लक्ष्य को पूरा करने का संकेत दे रहे हैं। आपके सीक्रेट्स के घर में कमजोर बुधदेव छिपे हुए खर्चों के बारे में चेतावनी दे रहे हैं। आज किसी भी जॉइंट वेंचर एग्रीमेंट पर साइन करने से बचें। आपके करियर के घर में शुक्रदेव बताते हैं कि आपकी कड़ी मेहनत पर ध्यान दिया जा रहा है। इससे जल्दी अमीर बनने के बजाय लंबे समय तक फाइनेंशियल स्थिरता मिलेगी।

कन्या राशि जॉइंट वेंचर या टैक्स से जुड़े फाइनेंशियल मामले सामने आ सकते हैं। जहां बृहस्पति के आपके स्टेटस पर असर से फायदा होने की संभावना है। वहीं, कमजोर बुधदेव नए कॉन्ट्रैक्ट या बोलकर किए गए एग्रीमेंट करने से आगाह कर रहे हैं। मौजूदा फाइनेंशियल रिकॉर्ड को ठीक करने पर ध्यान दें और साथियों को पैसे उधार देने से बचें, क्योंकि डील में प्रॉब्लम वाली रह सकती है।

तुला राशि आपकी आर्थिक स्थिति शुक्रदेव के प्रभाव से स्थिर है, खासकर संयुक्त निधियों या लंबे समय के निवेशों के मामले में। हालांकि, भाग्य के भाव में चंद्रदेव की उपस्थिति के कारण आप जोखिम उठाने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं। ऋण के भाव में स्थित कमजोर बुधदेव आपको ऐसा करने से सचेत करते हैं। अपने बजट पर कायम रहें और आज पुनर्भुगतान या ऋण के संबंध में वादे करने से बचें।

वृश्चिक राशि आपका आर्थिक ध्यान साझा संपत्तियों पर केंद्रित रहेगा। अष्टम भाव के प्रभाव से बीमा या जीवनसाथी की आय से संबंधित कोई खबर मिल सकती है। जहां एक ओर मिथुन राशि में स्थित चंद्रदेव आपको नई रणनीतियां अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। वहीं, दूसरी ओर कमजोर बुधदेव आपको आज कोई भी अंतिम सौदा करने से बचने की सलाह देते हैं। निवेश करने से पहले, जानकारियों का अच्छी तरह से एनालिसिस करें और मानसिक रूप से पूरी तरह स्पष्ट होने तक प्रतीक्षा करें।

धनु राशि आपके षष्ठम भाव में स्थित शुक्रदेव यह संकेत देते हैं कि निरंतर प्रयासों के जरिए आपकी आर्थिक स्थिति में स्थिर प्रगति होगी। जहां एक ओर अतीत के अष्टम भाव संबंधी प्रभाव अब क्षीर्ण हो रहे हैं, वहीं चतुर्थ भाव में स्थित कमजोर बुधदेव आपको घर या जमीन से जुड़े किसी भी नए आर्थिक समझौते में प्रवेश करने से सचेत करते हैं। छोटे-छोटे और क्रमिक लाभों पर ध्यान केंद्रित करें। सट्टेबाजी से जुड़े जोखिमों से बचें, भले ही आपका आत्मविश्वास कितना ही प्रबल क्यों न हो।

मकर राशि आपकी आर्थिक स्थिति स्थिर बनी रहेगी, और शुक्रदेव ग्रह आपकी रचनात्मक परियोजनाओं को सुरक्षा प्रदान करेगा। आपकी कार्य क्षमता अच्छी है। मगर, कमजोर बुधदेव अल्पकालिक सौदों से संबंधित नए कॉन्ट्रेक्ट या वादों से बचने का संकेत देते हैं। अपनी मौजूदा योजना पर टिके रहें और लंबे समय की स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करें। आज आपको जो जानकारी मिलेगी, वह अधूरी हो सकती है।

कुंभ राशि आज फाइनेंस आपके लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र है। बृहस्पति आपके रचनात्मक जीवन में प्रचुरता लाएंगे। मगर, धन भाव में मीन राशि का समूह अत्यधिक सावधानी बरतने की मांग करते हैं। आपको अपने बैंकिंग से जुड़े काम में गलतियां मिल सकती हैं या आय का कोई स्रोत अस्थायी रूप से लेट हो सकता है। गैजेट्स या विलासिता की वस्तुओं पर जोश में आकर खर्च करने से बचें। इसके बजाय आज के दिन का इस्तेमाल अपने खर्चों का लेखा-जोखा करने और अपने वित्तीय दस्तावेजों को सावधानी के साथ मैनेज करने के लिए करें।

मीन राशि सूर्यदेव के दूसरे भाव में होने से आपकी वित्तीय संभावनाएं मजबूत होंगी, जिससे आपकी आय बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी। आप आय के नए स्रोत तलाश सकते हैं। हालांकि, बुधदेव की दुर्बलता के कारण आज अहम ओरल कमिटमेंट्स करने या अहम वित्तीय दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने से बचें। इस समय का इस्तेमाल अपनी पूंजी के साथ जल्दबाजी में कदम उठाने के बजाय अपने संसाधनों को व्यवस्थित करने के लिए करें।

आज मनाई जाएगी स्कंदा षष्ठी, जानें पूजा विधि और संतान प्राप्ति के अचूक उपाय

हिंदू धर्म में व्रत-त्योहार का विशेष महत्व माना जाता है। स्कंद षष्ठी का व्रत भगवान मुरुगन यानी कार्तिकेय जी को समर्पित है। हिंदू पंचांग के अनुसार, वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को स्कंद षष्ठी मनाई जाती है। इस बार 22 अप्रैल यानी कल स्कंद षष्ठी मनाई जाएगी। स्कंद षष्ठी का व्रत भगवान शिव और मात पार्वती के बड़े पुत्र कार्तिकेय को समर्पित है। धार्मिक ग्रंथों में इन्हें सुब्रमण्यम, मुरुगन और षडानन जैसे कई नामों से जाना और पूजा जाता है। मान्यता है कि स्कंद षष्ठी का व्रत विशेष रूप से उन दंपत्तियों के लिए लाभकारी होता है, जो संतान सुख की इच्छा रखते हैं। इसके साथ ही, यह व्रत शत्रुओं पर विजय पाने, आत्मबल बढ़ाने और जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने में भी सहायक माना गया है। आइए आपको बताते हैं स्कंद षष्ठी का शुभ मुहूर्त, पूजा की विधि और वे सरल उपाय, जिनसे संतान प्राप्ति की कामना पूरी हो सकती है। स्कंद षष्ठी 2026 पूजा विधि - स्कंद षष्ठी के दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नान करें और स्वच्छ लाल या पीले वस्त्र धारण करें। हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना के साथ व्रत का संकल्प

लें। इसके बाद ही एक साफ चौकी पर लाल वस्त्र बिछाएं और उस पर भगवान कार्तिकेय की तस्वीर या मूर्ति स्थापित करें। भगवान कार्तिकेय के साथ ही शिव-पार्वती का पूजन भी करना बेहद जरुरी है। पूजन के दौरान भगवान कार्तिकेय को पंचामृत और जल से स्नान कराएं और इन्हें चंदन, कुमकुम और अक्षत अर्पित करें। शास्त्रों के अनुसार, कार्तिकेय जी को नीले फूल और मोरपंख अत्यंत प्रिय है, इसलिए इन्हें पूजा में जरुर शामिल करें। इसके बाद धूप-दीप जलाकर फल और मिठाई का भोग लगाएं। पूजन के दौरान ॐ स्कन्दाय नमः या ॐ शरवणभवाय नमः का जाप करें। पूजा के आखिरी में कथा सुनें और आरती करें। स्कंद षष्ठी व्रत के नियम इस दिन मन,वचन और कर्म से शुद्ध रहना जरुरी माना गया है। इसलिए इस दिन तामसिक भोजन जैसे कि लहसुन, प्याज, मांस) और नशीली वस्तुओं का सेवन न करें। व्रत के दिन किसी भी प्रकार के विवाद, क्रोध या किसी की निंदा न करें। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन जमीन पर सोना शुभ होता है। इसके साथ ही जरुरतमंदों को फल, वस्त्र व अनाज दान करें।

10 के बदले 950 का झांसा ऑनलाइन मटका सट्टा बना डिजिटल जाल युवा हो रहे कंगाल

गणेश-गोपाल मटका के नाम पर खुला खेल लालच का लॉगिन, नुकसान का लॉगआउट प्रशासन से सख्ती की मांग

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सोशल मीडिया के बढ़ते दायरे के साथ अब अवैध गतिविधियों ने भी डिजिटल रूप ले लिया है। इन दिनों ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर गणेश और गोपाल मटका के नाम से सट्टा खुलेआम संचालित हो रहा है। आकर्षक ऑफर के नाम पर लोगों को 10 रुपए के बदले 950 रुपए और अतिरिक्त 10 प्रतिशत बोनस का लालच दिया जा रहा है। यह सुनने में जितना आसान और फायदेमंद लगता है। हकीकत में उतना ही खतरनाक साबित हो रहा है।

इस लालच के जाल में फंसकर कई युवा अपना समय और मेहनत की कमाई गंवा रहे हैं।हाल ही में बैतूल जिले के एक युवक के साथ लगभग 46 लाख रुपए की ऑनलाइन ठगी का मामला सामने आया,जिसका शव परतवाड़ा के एक लॉज में मिला।इस घटना ने न केवल परिवार बल्कि पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया है। मामले की जांच पुलिस द्वारा की जा रही है,लेकिन यह सवाल भी उठ रहा है कि ऐसे अवैध ऑनलाइन नेटवर्क आखिर कैसे बेखौफ संचालित हो रहे हैं।सोशल मीडिया पर खुलेआम घर बैठे खेलिए गली,फरीदाबाद, दिसावर,गाजियाबाद का सट्टा जैसे संदेश प्रसारित किए जा रहे हैं,जो सीधे तौर पर लोगों को जाल में फंसाने का काम कर रहे हैं।कई लोग आर्थिक नुकसान झेलने के बाद सामाजिक डर और लोक-लाज के कारण शिकायत दर्ज नहीं करा पाते, जिससे ऐसे गिरोह और अधिक सक्रिय हो जाते हैं।

10 रुपए लगाओ, 950 पाओ का यह खेल असल में 10 लगाओ,सब गंवाओ साबित हो रहा है।डिजिटल युग में यह भाग्य चमकाने का नहीं,बल्कि खाता खाली कराने का नया तरीका बन गया है।इस तरह के ऑनलाइन मटका सट्टा पर तत्काल सख्त कार्रवाई की आवश्यकता है। साइबर सेल को सक्रिय करते हुए ऐसे प्लेटफॉर्म्स और लिंक पर निगरानी बढ़ाई जानी चाहिए। साथ ही,जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को इस तरह के लालच से दूर रहने के लिए प्रेरित किया जाए।आमजन को समझना होगा कि कोई भी आसान और त्वरित कमाई का लालच अक्सर धोखे का ही दूसरा नाम होता है।खून-पसीने की कमाई को ऐसे ऑनलाइन जाल में फंसाकर बर्बाद करने से बचें और संदिग्ध गतिविधियों की सूचना तत्काल स्थानीय पुलिस महक में को दिया जाना चाहिए जिससे इस तरह की ठगी फरेबी पर अंकुश लगाया जा सके।

सिविल सेवा दिवस पर सपनों को मिली दिशा लक्ष्य निर्धारण कार्यक्रम ने जगाई नई ऊर्जा

युवाओं को प्रशासनिक सेवा के लिए प्रेरित करने महाविद्यालय में हुआ आयोजन,आंकड़ों और उदाहरणों से बढ़ा आत्मविश्वास

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सरदार विष्णु सिंह उईके शासकीय महाविद्यालय में सिविल सेवा दिवस के अवसर पर प्रेरणा एवं लक्ष्य निर्धारण कार्यक्रम का आयोजन उत्साहपूर्ण वातावरण में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रशासनिक सेवाओं की ओर प्रेरित करना और उन्हें अपने जीवन का स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करना रहा। प्राचार्य प्रदीप पंद्राम ने अपने उद्बोधन में सिविल सेवा दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 21 अप्रैल 1947 को देश के प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने प्रशासनिक सेवाओं को राष्ट्र की स्टील फ्रेम कहा था। तभी से यह दिवस उन कर्मठ अधिकारियों को समर्पित है जो देश के विकास और सुशासन में अहम भूमिका निभाते हैं।उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि निरंतर परिश्रम, अनुशासन और सकारात्मक सोच के साथ कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

कार्यक्रम में सिविल सेवा से जुड़े महत्वपूर्ण आंकड़ों की जानकारी भी दी गई। बताया गया कि संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक मानी जाती है,जिसमें हर वर्ष लाखों अभ्यर्थी शामिल होते हैं,लेकिन अंतिम चयनित उम्मीदवारों की संख्या लगभग 700 से 1000 के बीच रहती है।इस प्रतिस्पर्धा के बाद सही मार्गदर्शन और दृढ़ संकल्प से सफलता संभव है।विद्यार्थियों को प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी के प्रति जागरूक करने के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (LBSNAA) से संबंधित एक प्रेरणादायक लघु फिल्म भी प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रदर्शित की गई, जिससे विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रक्रिया और सेवा जीवन की झलक देखने को मिली।कार्यक्रम का संचालन राजेश कुमार हनोते ने किया, जबकि तकनीकी सहयोग दिनकर लिखितकर और अनुज हलदार द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम में दशरु यदुवंशी,शैलेश श्रीवास्तव,गोलमन आहके, उत्तम साहू,संगीता उघड़े, लक्ष्मी नागले,कविता धोटे, गंगा चौरे,अनीता नागले, निकिता सोनी,अनिल तुमड़ाम,रीना उईके,प्रियंका दवंडे सहित अन्य स्टाफ और बड़ी संख्या में विद्यार्थी एवं अभिभावक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम ने न केवल विद्यार्थियों को सिविल सेवा की दिशा में प्रेरित किया, बल्कि उन्हें अपने सपनों को साकार करने के लिए ठोस योजना बनाने का संदेश भी दिया।

अवैध पर मेहरबानी,वैध पर बेरुखी वार्ड 36 बना चयनित विकास का मॉडल!

जहां नियम सोते हैं,वहां स्ट्रीट लाइट जगमगाती है, आखिर वार्ड पार्षद की कृपा दृष्टि का राज क्या है

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका परिषद सारनी इन दिनों विकास के एक नए प्रयोग को लेकर चर्चा में है,जहां नियम किताबों में रहते हैं और सुविधाएं सीधे अवैध कॉलोनियों में पहुंच जाती हैं। खासतौर पर महावीर स्वामी वार्ड क्रमांक 36 इस अनोखे मॉडल का चमकता उदाहरण बन गया है।शहर में एक दर्जन से अधिक अवैध कॉलोनियां मौजूद हैं,जिनमें रहने वाले लोग आज भी सड़क,पानी और स्ट्रीट लाइट जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं।लेकिन इसी भीड़ में एक कॉलोनी ऐसी भी है,जिस पर नगर पालिका की विशेष कृपा बरस रही है। वेकोलि कॉलोनी के पास स्थित इस अवैध बस्ती में सड़क,रिटर्निंग वॉल और स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था देखकर बाकी कॉलोनियों के लोग भी हैरान हैं,और शायद थोड़ा प्रेरित भी !अब सवाल उठना लाजिमी है कि जब अवैध कॉलोनी में ही विकास की गंगा बहानी है,तो फिर बाकी 11 कॉलोनियों को सूखा क्यों रखा गया है? क्या विकास भी अब चयनित लाभार्थी योजना के तहत बांटा जा रहा है।इस पूरे मामले में वार्ड पार्षद की भूमिका भी सवालों के घेरे में है।आखिर वार्ड पार्षद यह बताने की जहमत उठाएंगे कि अवैध कॉलोनी में सुविधाएं बहाल कराने की इतनी तत्परता क्यों दिखाई जा रही है।और अगर यह संभव है,तो फिर अन्य कॉलोनियों के साथ यह भेदभाव क्यों।दिलचस्प बात यह भी है कि जिन कॉलोनियों पर जुर्माना लगा हुआ है और जिनके संचालकों ने अब तक नगर पालिका में राशि जमा नहीं की,वहीं पर निर्माण कार्य पूरे उत्साह से जारी है।वहीं, बगडोना और एलआईसी के पीछे की अवैध कॉलोनियों में रहने वाले लोग आज भी मूलभूत सुविधाओं का इंतजार कर रहे हैं।अब देखना यह है कि नगर पालिका परिषद सारनी का यह विशेष प्रेम आगे और किन-किन कॉलोनियों तक पहुंचता है,या फिर यह विकास की कहानी सिर्फ एक ही कॉलोनी तक सीमित रहकर सवालों की लंबी सूची छोड़ जाएगी।

बांस की झाड़ियों में भड़की आगः 80 प्रतिशत हिस्सा राख, बड़ा हादसा टला

लापरवाही या गर्मी की मार समय रहते दमकल पहुंची, फैलने से रोकी आग बांस जलने से बढ़ता है खतरा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

मंगलवार शाम करीब 4 बजे कॉलेज मार्ग स्थित फॉरेस्ट कार्यालय परिसर में अचानक बांस के घने झुंड में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और लगभग 80 प्रतिशत बांस का समूह जलकर राख हो गया। सूचना मिलते ही नगर पालिका परिषद बैतूल का दमकल अमला मौके पर पहुंचा और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।हालांकि मुख्य बांस का घेरा पूरी तरह नहीं बचाया जा सका,लेकिन आसपास मौजूद अन्य बांस के गोल घेरों और फॉरेस्ट कार्यालय परिसर को सुरक्षित रखने में दमकल कर्मियों ने अहम भूमिका निभाई।समय रहते कार्रवाई नहीं होती तो आग बड़े नुकसान का कारण बन सकती थी। बताया जाता है कि बांस अत्यंत ज्वलनशील होता है।इसके अंदर मौजूद सूखा रेशा और खोखली संरचना आग को तेजी से फैलने में मदद करती है।जलने के दौरान बांस फटने जैसी आवाज के साथ चिंगारियां उछालता है, जिससे आग दूर तक फैल सकती है।यही कारण है कि बांस के झुंड में लगी आग आसपास के क्षेत्रों के लिए गंभीर खतरा बन जाती है।

भीषण गर्मी के बीच इस तरह की घटनाओं में मानव लापरवाही भी बड़ी भूमिका निभाती है।अक्सर लोग बीड़ी-सिगरेट पीकर उसके जलते टुकड़े झाड़ियों में फेंक देते हैं,जो कुछ ही समय में आग का रूप ले लेते हैं।ऐसी घटनाएं कई बार जनहानि और पर्यावरणीय नुकसान का कारण बन चुकी हैं।प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि गर्मी के मौसम में विशेष सावधानी बरतें।जंगल,झाड़ियों या बांस के क्षेत्रों के आसपास किसी भी प्रकार की जलती वस्तु न फेंकें और आग लगने की स्थिति में तुरंत सूचना दें।समय रहते सतर्कता और जिम्मेदारी ही ऐसे हादसों को रोक सकती है।

बैतूल में निजी नलकूप खनन पर 30 जून तक प्रतिबंध, गिरते जलस्तर पर प्रशासन सख्त, उल्लंघन पर 2 साल की सजा, 10 हजार जुर्माना

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल में भूजल स्तर में लगातार गिरावट को देखते हुए जिला प्रशासन ने बड़ा फैसला लिया है। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने 20 अप्रैल 2026 से 30 जून 2026 तक जिले में सभी निजी और अशासकीय नलकूप खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी किए हैं। आदेश के अनुसार, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) की अनुमति के बिना कोई भी बोरिंग मशीन जिले में प्रवेश नहीं कर सकेगी और न ही नए नलकूप खोदे जा सकेंगे। हालांकि, केवल मार्ग से गुजरने वाली मशीनों को इस प्रतिबंध से छूट दी गई है।

प्रशासन ने राजस्व और पुलिस अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि प्रतिबंध का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाए। अवैध खनन या मशीन लाने पर उपकरण जब्त किए जाएंगे और संबंधित के खिलाफ एफआईआर दर्ज होगी।

दो साल तक की सजा और जुर्माने का प्रावधान आदेश का उल्लंघन करने पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 9 के तहत दो वर्ष तक का कारावास या 10 हजार रुपए तक का जुर्माना, अथवा दोनों हो सकते हैं। साथ ही धारा 223 के तहत भी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। शासकीय योजनाओं के तहत होने वाले नलकूप खनन कार्य इस प्रतिबंध से मुक्त रहेंगे। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग (PHE) के कार्य पूर्ववत जारी रहेंगे। आवश्यकता पड़ने पर प्रशासन निजी जल स्रोतों का अधिग्रहण कर उन्हें सार्वजनिक पेयजल व्यवस्था में उपयोग कर सकता है।

बैतूल में अतिक्रमण हटाओ अभियान का विरोध, कलेक्ट्रेट पहुंचकर जताई नाराजगी व्यापारियों ने 15 दिन का समय मांगा

दैनिक कारखाने का सफर।

बैतूल में चल रहे अतिक्रमण हटाओ अभियान के विरोध में मंगलवार को फुटपाथ पर दुकान लगाने वाले व्यापारियों ने प्रदर्शन किया। व्यापारी कलेक्ट्रेट पहुंचे और कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपकर अपनी समस्याएं रखीं। दुकानदारों का कहना है कि वे पिछले 8 से 10 वर्षों से सड़क किनारे छोटी-छोटी दुकानें लगाकर परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं। अभियान के तहत उनकी गुमटियां और ठेले हटाए जा रहे हैं, जिससे उनके सामने रोजगार का संकट खड़ा हो गया है। व्यापारियों ने प्रशासन द्वारा दिए जा रहे वैकल्पिक स्थान को अनुपयुक्त बताया। उनका कहना है कि वहां ग्राहकों की आवाजाही कम है, जिससे व्यापार प्रभावित होगा। दुकानदारों ने मांग की है कि उन्हें जेल के पास स्थित स्थान पर दुकान लगाने की अनुमति दी जाए, जैसा कि पहले आश्वासन दिया गया था। व्यापारियों ने बताया कि यह उनका सीजन का समय है और उन्होंने उधार लेकर सामान खरीदा है। ऐसे में अभी दुकानें हटाने से उन्हें भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा। दुकानदारों ने आरोप लगाया कि सीएमओ ने पहले 10 दिन की मोहलत दी थी, लेकिन अगले ही दिन कार्रवाई शुरू कर दी गई। व्यापारियों ने प्रशासन से कम से कम 15 दिन की मोहलत देने और उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराने की मांग की है, ताकि वे अपना व्यवसाय जारी रख सकें।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949